हिंदी
विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : - 7 - 13 June 2026

मुद्रा

"Metal to Digital via Plastic"

पितांबरी® टूर्स और ट्रॅवल्स

दुनिया घूमिए, अपनापन पाइए।

भारत के अद्वितीय स्थलों की सैर!

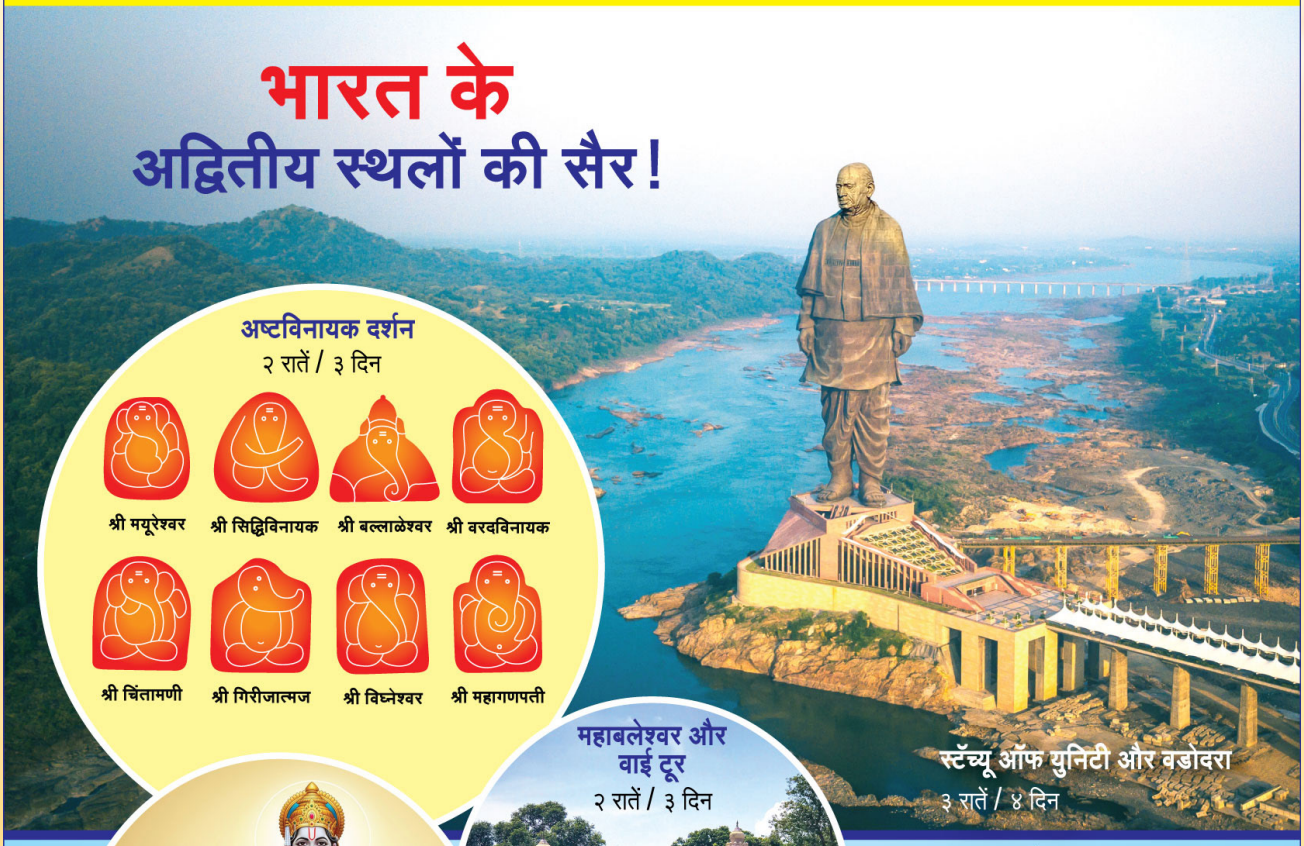

अष्टविनायक दर्शन
२ रातें / ३ दिन

श्री मयूरेश्वर | श्री सिद्धिविनायक | श्री बल्लाळेश्वर | श्री वरदविनायक

श्री चिंतामणी | श्री गिरीजात्मज | श्री विघ्नेश्वर | श्री महागणपती

स्टॅच्यू ऑफ युनिटी और वडोदरा
३ रातें / ४ दिन

महाबलेश्वर और वाई टूर
२ रातें / ३ दिन

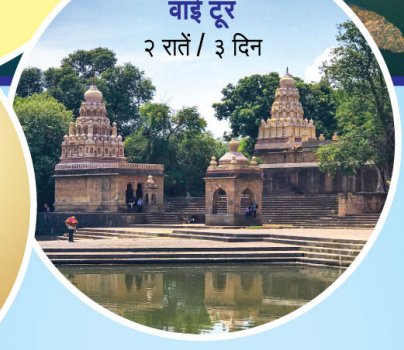

श्री समर्थ रामदास द्वारा स्थापित ११ मारुती दर्शन

२ रातें / ३ दिन

टूर में शामिल :

- एसी बस / गाड़ी सफर और स्थानीय पर्यटन स्थलों की सैर
- ठहरने के लिए प्रीमियम होटल्स
- स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था
- जानकार गाइड और सभी प्रवेश टिकट

हमारे अन्य टूर्स

कोस्टल कर्नाटक	केरल	हंपी बदामी	राजस्थान- मेवाड़ / मारवाड़	कश्मीर
(बाय रोड) ६ रातें / ७ दिन	(बाय फ्लाईट) ४ रातें / ५ दिन	(बाय रोड) ५ रातें / ६ दिन	(बाय फ्लाईट) ५ रातें / ६ दिन	६ रातें / ७ दिन

जल्द ही हिमाचल और नैनीताल टूर्स का आयोजन

नेपाल टूर ! (बाय फ्लाईट) - ७ रातें / ८ दिन

Attractive Discount on Select Tours Costing more than ₹12000/-

अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए संपर्क:

8657968481, 8530015838, 9702963400, 8657307352, 8828913131

अनुक्रमणिका

◆ गिन्नी से प्लास्टिक के नोटों तक की यात्रा	योगेश कुमार गोयल	04
◆ बढ़ता डॉलर घटता रुपया	दीपक कुमार द्विवेदी	06
◆ महंगाई का प्रभाव	सतीश सिंह	08
◆ स्मरण तुम्हारा स्फुरण हमारा	डॉ. नीलप्रभा नाहर	11
◆ विरोध या अराजक राजनीति का नया प्रयोग	ललित गर्ग	13
◆ दिल्ली संघ यात्रा पर बनी वृतचित्र	अतुल गंगवार	15
◆ संस्कृति व सेवा का सर्वोच्च सम्मान	आशीष कुमार 'अंशु'	15
◆ व्यक्ति एवं राष्ट्र निर्माण की पाठशाला	राघव कुमार झा	19
◆ वायुसेना की निगरानी में नीट	प्रमोद जोशी	21
◆ पीजी में ऐसे रहें सुरक्षित व सहज	निधि गोयल	24
◆ धातु में ढली संस्कृति और सभ्यता	डॉ. मोनिका जैन	26
◆ आम की मिठास नहीं आ रही रास	डॉ. धीरज फूलमती सिंह	27
◆ आयुष्मान से अछूती बीमारियां	संकलन	28
◆ इधर भी देखें	संकलन	29

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2,
श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप,
कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067. सम्पर्क : 9594991884

गिन्नी से प्लास्टिक के नोटों तक की यात्रा

योगेश कुमार गोयल

मुद्रा का हर नया रूप अपने समय की एक ऐसी कहानी कहता है, जिसमें विज्ञान, विश्वास और विकास तीनों का अद्भुत संगम होता है। आने वाले वर्षों में चाहे मुद्रा का स्वरूप कितना भी बदल जाए, उसकी मूल शक्ति हमेशा एक ही रहेगी।

मानव सभ्यता के आर्थिक इतिहास को यदि किसी एक धुरी पर समझना हो तो वह है मुद्रा का विकास। यह केवल लेन-देन का साधन नहीं बल्कि विश्वास, शक्ति, तकनीक और समय के साथ बदलती मानवीय आवश्यकताओं का दर्पण भी है। मुद्रा का विकास वस्तु-विनिमय से शुरू होकर आज के आधुनिक डिजिटल और प्लास्टिक युग तक पहुंच चुका है। यह यात्रा बहुत ही रोमांचक और महत्वपूर्ण रही है, जो समय के साथ तकनीक और अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं के अनुसार बदलती गई। सोने की गिन्नियों से लेकर आज के अत्याधुनिक प्लास्टिक (पॉलिमर) नोटों तक की यात्रा एक ऐसी कहानी है, जिसमें सभ्यता का विकास, विज्ञान की उन्नति और अर्थव्यवस्था की जटिलताएं एक साथ गुंथी हुई हैं। प्राचीन काल में जब मुद्रा का आविष्कार नहीं हुआ था, जब वस्तु विनिमय प्रणाली प्रचलन में थी, तब लेन-देन पूरी तरह वस्तुओं के आदान-प्रदान पर निर्भर था, लेकिन जैसे-जैसे समाज जटिल होता गया, एक ऐसी वस्तु की आवश्यकता का अनुभव हुआ, जो सभी के लिए समान रूप से स्वीकार्य हो। इसी आवश्यकता ने धातु मुद्रा को जन्म दिया। सोने, चांदी और ताम्बे के सिक्के न केवल टिकाऊ थे बल्कि उनमें अंतर्निहित मूल्य भी होता था। भारत में मौर्य और गुप्तकाल के सिक्के इस बात के प्रमाण हैं कि धातु मुद्रा ने व्यापार और प्रशासन को कितना सशक्त बनाया। मध्यकाल और आधुनिक युग के आरम्भ तक धातु के सिक्के ही प्रमुख मुद्रा रहे, लेकिन इनके साथ कई समस्याएं भी थीं, जैसे भारी वजन, परिवहन में कठिनाई और चोरी का भय। जैसे-जैसे व्यापार का विस्तार हुआ और अंतरराष्ट्रीय लेन-देन बढ़ा, इन सीमाओं ने एक नए विकल्प की आवश्यकता पैदा की। यही वह समय था, जब कागजी मुद्रा का जन्म हुआ।

चीन को कागजी मुद्रा का जनक माना जाता है, जहां 7वीं शताब्दी में पहली बार नोटों का उपयोग शुरू हुआ। बाद में यह प्रणाली यूरोप और अन्य देशों में भी फैल गई। कागजी मुद्रा ने अर्थव्यवस्था को नई गति दी। यह हल्की थी, ले जाने में आसान थी और बड़े मूल्य के लेन-देन को सरल बनाती थी।

भारत में ब्रिटिश शासन ने आधुनिक कागजी मुद्रा प्रणाली की नींव रखी और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने अपनी सम्प्रभु मुद्रा व्यवस्था विकसित की तथा भारतीय रिजर्व बैंक को मुद्रा प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपी गई। वर्ष 1950 में भारतीय गणराज्य बनने के बाद नए नोटों और सिक्कों पर अशोक स्तम्भ को राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में स्थान मिला। आज भारतीय मुद्रा पारम्परिक विरासत और आधुनिक तकनीक के अद्भुत संगम का प्रतीक बन चुकी है। समय के साथ कागज के नोटों के डिजाइन, सुरक्षा फीचर्स और छपाई तकनीक में लगातार सुधार होता गया। हालांकि कागजी नोटों के साथ चुनौतियां कम नहीं हैं। ये जल्दी खराब हो जाते हैं, पानी और आग से क्षति का भय रहता है और नकली नोटों की समस्या भी गम्भीर बनी रहती है। प्रत्येक वर्ष लाखों-करोड़ों नोट खराब होकर वापस बैंकिंग प्रणाली में लौटते हैं, जिनकी छपाई और प्रतिस्थापन पर भारी खर्च होता है। यही कारण है कि दुनिया के कई देशों ने अब पॉलिमर नोटों की ओर कदम बढ़ाया है।

पॉलिमर नोट मूलतः प्लास्टिक से बने होते हैं, जो पारम्परिक कागज के नोटों की तुलना में कहीं अधिक टिकाऊ होते हैं। सबसे पहले 1988 में ऑस्ट्रेलिया ने इन्हें प्रचलन में लाकर एक नई क्रांति की शुरुआत की। आज कनाडा, ब्रिटेन, सिंगापुर, न्यूजीलैंड सहित कई देशों में पॉलिमर नोट व्यापक रूप से उपयोग किए जा रहे हैं। इन नोटों की सबसे बड़ी विशेषता इनकी लम्बी आयु है, ये कागजी नोटों की तुलना में तीन से पांच गुना अधिक समय तक चलते हैं। पॉलिमर नोटों में सुरक्षा के अत्याधुनिक फीचर्स होते हैं, जैसे पारदर्शी खिड़की, होलोग्राम, माइक्रोप्रिंटिंग और विशेष इंक, जिन्हें नकली बनाना बेहद कठिन होता है। इसके अलावा ये जलरोधक होते हैं, आसानी से फटते नहीं हैं और अपेक्षाकृत गंदे भी नहीं होते हैं। पर्यावरण की दृष्टि से भी ये बेहतर माने जाते हैं क्योंकि इनका जीवनकाल लम्बा होता है, जिससे बार-बार छपाई की आवश्यकता कम हो जाती है।

भारत भी इस दिशा में कदम बढ़ा रहा है। भारतीय रिजर्व बैंक पायलट प्रोजेक्ट के रूप में पॉलिमर नोटों को लाने की योजना पर गम्भीरता से काम कर रहा है। यदि यह योजना पूरी तरह लागू होती है तो इससे न केवल छपाई लागत में कमी आएगी बल्कि नकली नोटों पर भी बहुत सीमा तक नियंत्रण पाया जा सकेगा। हालांकि इस बदलाव के साथ कुछ चुनौतियां भी जुड़ी हैं, जैसे प्रारम्भिक लागत, मशीनों और एटीएम में आवश्यक बदलाव तथा आम जनता के बीच जागरूकता फैलाना। मुद्रा के इस विकास को केवल तकनीकी परिवर्तन के रूप में देखना अधूरा होगा। यह मानव समाज के बदलते स्वरूप और आवश्यकताओं का भी संकेत है। जहां धातु मुद्रा स्थायित्व और मूल्य का प्रतीक थी, वहीं कागजी मुद्रा ने सुविधा और विस्तार को बढ़ावा दिया। अब पॉलिमर नोट आधुनिक तकनीक, सुरक्षा और पर्यावरणीय संतुलन का प्रतीक बनकर उभर रहे हैं। भविष्य की बात करें तो डिजिटल मुद्रा और क्रिप्टोकरेंसी जैसे विकल्प भी तेजी से उभर रहे हैं। भारतीय रिजर्व बैंक भी डिजिटल रुपया (सीबीडीसी) पर काम कर रहा है, जो आने वाले समय में मुद्रा प्रणाली को और अधिक सुविधाजनक और सुरक्षित बना सकता है, लेकिन इसके बाद भी भौतिक मुद्रा का महत्व पूरी तरह समाप्त नहीं होगा, विशेषकर उन क्षेत्रों में, जहां डिजिटल पहुंच अभी सीमित है। सोने की गिन्नियों से लेकर प्लास्टिक नोटों तक की यह यात्रा मानव सभ्यता की अनवरत प्रगति का प्रतीक है। हर युग ने अपनी आवश्यकताओं के अनुसार मुद्रा को नया रूप दिया है। आज जब भारत पॉलिमर मुद्रा की सम्भावना पर विचार कर रहा है, तब वह केवल नोट का स्वरूप नहीं बदल रहा बल्कि भविष्य की आर्थिक आवश्यकताओं के अनुरूप अपनी वित्तीय व्यवस्था को अधिक सुरक्षित, टिकाऊ और आधुनिक बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

कभी एक डॉलर कुछ ही रुपए के बराबर हुआ करता था, लेकिन आज उसकी कीमत 95 रुपए से अधिक पहुंच चुकी है। रुपए की गिरावट का दुष्परिणाम केवल मुद्रा बाजार में ही नहीं बल्कि देश की अर्थव्यवस्था, महंगाई, व्यापार और आम नागरिक की जेब पर भी पड़ रहा है।

दीपक कुमार द्विवेदी

बढ़ता डॉलर घटता रुपया

वर्तमान समय में अमेरिका और ईरान के बीच बढ़े तनाव तथा होर्मुज जलडमरूमध्य में पैदा हुए संकट ने वैश्विक तेल बाजार को प्रभावित किया। यह समुद्री मार्ग दुनिया के लगभग 20 प्रतिशत तेल व्यापार का प्रमुख रास्ता है। ईरान द्वारा इस मार्ग पर दबाव बढ़ने से तेल आपूर्ति को लेकर चिंता बढ़ी और कच्चे तेल की कीमतें लगभग 100 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गईं। इसका सीधा प्रभाव भारत पर पड़ा क्योंकि भारत को अधिक महंगे दामों पर तेल खरीदने के लिए अधिक डॉलर खर्च करने पड़े। जब किसी देश से अधिक डॉलर बाहर जाते हैं और पर्याप्त डॉलर वापस नहीं आते, तब डॉलर महंगा होता है और रुपया कमजोर होने लगता है।

रुपए पर दबाव बढ़ने का दूसरा बड़ा कारण विदेशी निवेशकों की निकासी है। पिछले कुछ वर्षों में विदेशी निवेशकों ने भारतीय शेयर बाजार से अरबों डॉलर निकाले हैं। जब विदेशी निवेशक अपने भारतीय शेयर बेचकर बाहर जाते हैं, तब वे अपने निवेश को डॉलर में बदलते हैं। इससे डॉलर की मांग और बढ़ जाती है। दूसरी ओर भारत में एसआईपी और म्यूचुअल फंड में निवेश तेजी से बढ़ा है। प्रत्येक महीने लाखों भारतीय नियमित रूप से शेयर बाजार में पैसा लगा रहे हैं। यही पैसा बाजार को गिरने से बचा रहा है, किंतु कई अर्थविशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि भारतीयों का यही पैसा विदेशी निवेशकों को ऊंचे दामों पर शेयर बेचकर बाहर निकलने का अवसर दे रहा है।

अब सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि क्या एक डॉलर और एक रुपया बराबर हो सकते हैं? व्यवहारिक रूप से यह अत्यंत कठिन है। मुद्रा का मूल्य केवल नोट छापने से तय नहीं होता। यह उस देश की उत्पादन क्षमता, वैश्विक व्यापार, तकनीकी शक्ति, विदेशी निवेश और अंतरराष्ट्रीय विश्वास पर निर्भर करता है। अमेरिका विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। विश्व व्यापार का बड़ा भाग डॉलर में होता है और अंतरराष्ट्रीय ऋण भी डॉलर में दिए जाते हैं। इसलिए डॉलर की मांग हमेशा बनी रहती है। भारत ने कई बार अपनी मुद्रा का अवमूल्यन किया है। 1966 में एक डॉलर लगभग 4.76 रुपए के बराबर था, जिसे घटाकर लगभग 7.50 रुपए के आसपास कर दिया गया। इसके बाद 1991 में आर्थिक संकट के समय भारत के पास केवल कुछ सप्ताह का विदेशी मुद्रा भंडार बचा था। तब तत्कालीन वित्त मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह और प्रधान मंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव की सरकार ने रुपए का अवमूल्यन किया ताकि निर्यात बढ़ सके और विदेशी निवेश आकर्षित हो।

आज गिरते रुपए का सबसे बड़ा प्रभाव आम आदमी पर पड़ रहा है। पेट्रोल-डीजल और परिवहन महंगा होता है, तब

खाद्य पदार्थों की कीमतें बढ़ती हैं और विदेशों में पढ़ाई करने वाले छात्रों का खर्च लाखों रुपए बढ़ जाता है। छोटे उद्योग, जो आयातित कच्चे माल पर निर्भर हैं, वे भी भारी दबाव में आ जाते हैं। भारत सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक रुपए को स्थिर रखने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं। भारत का विदेशी मुद्रा भंडार वर्तमान में लगभग 697 अरब डॉलर के आसपास है। रिजर्व बैंक बाजार में डॉलर बेचकर रुपए को अत्यधिक गिरने से रोकने का प्रयास करता है। मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भर भारत, हरित ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहन और जैव ईंधन जैसी योजनाओं का उद्देश्य केवल विकास नहीं बल्कि डॉलर पर निर्भरता कम करना भी है। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा तेल की बचत और सोने की अनावश्यक खरीद कम करने की अपील भी इसी आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

आज दुनिया में डीडॉलराइजेशन अर्थात डॉलर पर निर्भरता कम करने की चर्चा तेज हो रही है। रूस पर लगाए गए आर्थिक प्रतिबंधों और उसके लगभग 300 अरब डॉलर के विदेशी मुद्रा भंडार को फ्रीज किए जाने के बाद अनेक देशों ने डॉलर आधारित व्यवस्था पर पुनर्विचार शुरू किया है। भारत भी स्थानीय मुद्राओं में व्यापार बढ़ाने और यूपीआई जैसी डिजिटल भुगतान व्यवस्था को वैश्विक स्तर पर विस्तार देने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

इसी बीच गोल्ड स्टैंडर्ड की चर्चा भी फिर से बढ़ रही है। अमेरिका के पास लगभग 8,133 टन सोना है, जबकि भारत के पास लगभग 880 टन स्वर्ण भंडार है। अनेक विशेषज्ञ मानते हैं कि भविष्य में यदि दुनिया फिर से स्वर्ण आधारित मुद्रा व्यवस्था की ओर लौटती है तो मुद्रा छपाई पर नियंत्रण लगेगा, मुद्रास्फीति कम होगी और वैश्विक अर्थव्यवस्था में अधिक स्थिरता आ सकती है।

भारतीय परम्परा में सोना और चांदी केवल आभूषण नहीं बल्कि आर्थिक सुरक्षा के साधन रहे हैं। अनुमान है कि भारतीय घरों और मंदिरों में 25 से 30 हजार टन सोना उपस्थित है। यह केवल परम्परा नहीं बल्कि पीढ़ियों के अनुभव से विकसित आर्थिक समझ है। वास्तव में यह संघर्ष केवल रुपए और डॉलर का नहीं बल्कि उस वैश्विक आर्थिक व्यवस्था का है जिसमें दुनिया का अधिकांश व्यापार और भुगतान एक ही मुद्रा पर आधारित हो गया है। जब तक भारत उत्पादन, तकनीकी क्षमता, ऊर्जा आत्मनिर्भरता और निर्यात शक्ति में पर्याप्त वृद्धि नहीं करेगा, तब तक रुपए पर दबाव बना रह सकता है। मजबूत रुपया केवल सरकारी हस्तक्षेप से नहीं बल्कि मजबूत अर्थव्यवस्था, आत्मनिर्भर उत्पादन और वैश्विक विश्वास से निर्मित होगा।

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

पुस्तकों का खजाना

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

10 से अधिक प्रतियां बुक करने पर विशेष छूट दी जाएगी

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

• Bank Details : State Bank of India • Branch : Charkop,
• A/C No. : 00000043884034193 • IFSC Code : SBIN0011694

पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

प्रशांत : 9594961855 / भोला : 9930016472 / संदीप : 7045961331
कार्यालय : 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

सतीश सिंह

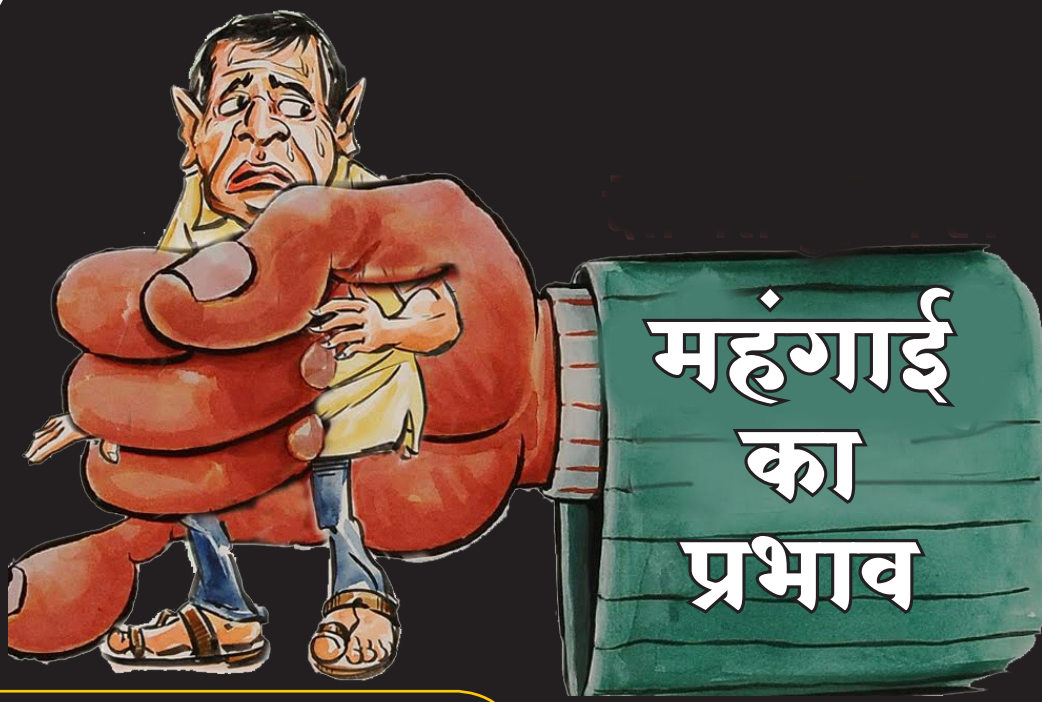

महंगाई का प्रभाव

महंगाई केवल अर्थशास्त्र की शब्दावली नहीं है बल्कि यह आम आदमी की थाली, जेब, बचत, जीवन-स्तर और भविष्य की योजनाओं से सीधे जुड़ा हुआ प्रश्न है। साथ ही इसका असर समाज की समग्र आर्थिक सेहत और अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता है। वर्तमान समय में वैश्विक परिस्थितियां महंगाई के जोखिम को लगातार गम्भीर बना रही हैं।

पश्चिम एशिया में तनाव, कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव, होर्मुज जलडमरूमध्य से जुड़ा जोखिम, आपूर्ति श्रृंखला में बाधा और कमजोर मानसून जैसी आशंकाएं भारत जैसे देश के लिए चिंता का कारण हैं। भारत अपनी ऊर्जा आवश्कताओं के लिए बड़े पैमाने पर आयात पर निर्भर है। इसलिए कच्चे तेल, प्राकृतिक गैस और ईंधन की कीमतों में वृद्धि का असर पेट्रोल से आगे बढ़कर खेत, फैक्टरी, बाजार, रसोई और निर्माण क्षेत्र तक पहुंचता है।

सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार अप्रैल 2026 में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित खुदरा महंगाई दर 3.48 प्रतिशत रही, जबकि मार्च 2026 में यह 3.40 प्रतिशत थी। खाद्य महंगाई अप्रैल में 4.20 प्रतिशत तक पहुंच गई। ग्रामीण क्षेत्रों में महंगाई दर 3.74 प्रतिशत और शहरी क्षेत्रों में 3.16 प्रतिशत दर्ज की गई। इधर, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार अप्रैल 2026 में थोक मूल्य सूचकांक आधारित महंगाई 8.30 प्रतिशत तक पहुंच गई, जो मार्च में 3.88 प्रतिशत थी। यह करीब साढ़े 3 वर्षों का उच्च स्तर है। थोक महंगाई का तेज बढ़ना इस बात का संकेत है कि उद्योगों और उत्पादकों की लागत तेजी से बढ़ रही है। ज्ञात हो कि थोक स्तर पर बढ़ी हुई लागत कुछ समय के अंतराल के बाद खुदरा बाजार तक पहुंच जाती है अर्थात खुदरा महंगाई में अभी और भी तेजी आने वाली है।

ईंधन और बिजली श्रेणी में महंगाई विशेष रूप से चिंताजनक है। अप्रैल 2026 में इस श्रेणी की थोक महंगाई 24.71 प्रतिशत तक पहुंच गई है। पेट्रोल, डीजल,

महंगाई का प्रश्न केवल बाजार भाव का प्रश्न नहीं है। यह आम आदमी की थाली, परिवार की बचत, बच्चों की शिक्षा, बुजुर्गों की दवा, किसानों की लागत, उद्योगों की प्रतिस्पर्धा, निवेश की गति और देश की विकास दर से जुड़ा हुआ व्यापक आर्थिक-सामाजिक मुद्दा है।

एलपीजी, कच्चा तेल और प्राकृतिक गैस की कीमतों में वृद्धि का प्रभाव केवल वाहन चालकों तक सीमित नहीं रहता। इससे माल ढुलाई महंगी होती है, खेती की लागत बढ़ती है और फैक्ट्रियों की उत्पादन लागत में बढ़ोत्तरी होती है। परिवहन लागत बढ़ने से सब्जियां, फल, दूध, अनाज, दवाइयां, ब्रेड, सीमेंट और अन्य उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतें बढ़ जाती हैं।

महंगाई का सबसे बड़ा और प्रत्यक्ष प्रभाव आम आदमी के घरेलू बजट पर पड़ता है। सीमित आय वाले परिवारों के लिए प्रत्येक महीने खर्चों का संतुलन बनाना कठिन हो जाता है। आटा, दाल, चावल, सब्जी, तेल, दूध, गैस सिलिंडर, बिजली बिल, स्कूल फीस, किराया और दवाइयों का खर्च बढ़ने से आय का बड़ा हिस्सा आवश्यक चीजों में ही समाप्त हो जाता है।

ऐसे में बचत घटती है, निवेश टलता है और परिवार भविष्य की योजनाओं को स्थगित करने के लिए विवश हो जाता है। वहीं गरीब पोषण, इलाज और शिक्षा जैसे बुनियादी खर्चों में कटौती करता है।

महंगाई रुपए की क्रय-शक्ति कम कर देती है। आज जिस वस्तु को खरीदने के लिए 100 रुपए पर्याप्त हैं, महंगाई बढ़ने पर उसी वस्तु के लिए भविष्य में अधिक राशि चुकानी पड़ती है। इस स्थिति का सबसे अधिक हानि निश्चित आय वाले लोगों, पेंशनभोगियों, मजदूरों, असंगठित क्षेत्र के कामगारों और निम्न मध्यम वर्ग को होता है। इस तरह महंगाई केवल एक आर्थिक समस्या ही नहीं है बल्कि सामाजिक असमानता को भी बढ़ाती है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर महंगाई का असर दोहरा होता है। एक ओर खाद, बीज, डीजल, बिजली, मजदूरी और परिवहन लागत बढ़ने से खेती महंगी होती है, दूसरी ओर उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतें बढ़ने से ग्रामीण परिवारों का खर्च भी बढ़ जाता है। यदि मानसून कमजोर रहता है तो खाद्य उत्पादन प्रभावित हो सकता है, जिससे खाद्य महंगाई और तेज हो सकती है। अर्थव्यवस्था के स्तर पर महंगाई कई दिशाओं से दबाव डालती है। जब कच्चा माल, ऊर्जा, परिवहन और मजदूरी महंगे होते हैं तो कम्पनियों की उत्पादन लागत बढ़ जाती है। यदि कम्पनियां यह लागत उपभोक्ताओं पर डालती हैं तो वस्तुएं महंगी होती हैं और मांग घट सकती है। यदि वे लागत स्वयं वहन करती हैं तो उनका मुनाफा कम होता है। दोनों ही स्थितियां निवेश, उत्पादन और रोजगार के लिए प्रतिकूल हैं। लम्बे समय तक लागत बढ़ने और मांग घटने की स्थिति बनी रहे तो छोटे और मध्यम उद्योगों पर सबसे अधिक दबाव पड़ता है।

महंगाई बढ़ने पर केंद्रीय बैंक आम तौर पर ब्याज दरों के जरिए उसे नियंत्रित करने का प्रयास करता है। रेपो दर बढ़ने से बैंक ऋण महंगे हो जाते हैं। इसका असर गृह ऋण, वाहन ऋण, व्यक्तिगत ऋण और व्यावसायिक ऋण पर पड़ता है। जब ईएमआई बढ़ती है तो उपभोक्ता खर्च कम करते हैं। उद्योग नए प्रोजेक्ट शुरू करने से बचते हैं। रियल इस्टेट, ऑटोमोबाइल, उपभोक्ता वस्तुएं, पर्यटन और सेवा क्षेत्र पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

निवेशकों के लिए भी महंगाई अनिश्चितता पैदा करती है। जब लागत, ब्याज दर और मांग को लेकर स्थिति स्पष्ट न हो तो घरेलू और विदेशी निवेशक सतर्क रुख अपनाते हैं। इससे पूंजी निवेश, रोजगार सृजन और उत्पादन क्षमता विस्तार प्रभावित होते हैं। देश के भीतर महंगाई बढ़ने से मुद्रा की आंतरिक क्रय-शक्ति घटती है और आयात महंगे हो सकते हैं। यदि घरेलू उत्पादन लागत बहुत बढ़ जाती है तो निर्यात प्रतिस्पर्धा भी कमजोर पड़ सकती है। हालांकि यह समझना भी आवश्यक है कि महंगाई का अत्यंत निम्न स्तर या कीमतों का लगातार गिरना भी अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा नहीं होता। जब महंगाई की गति नियंत्रित होती है तो इसे डिसइंफ्लेशन कहा जाता है और यह आमजन को राहत देता है, लेकिन जब कीमतें लगातार गिरने लगती हैं और महंगाई दर शून्य से नीचे चली जाती है तो उसे डिफ्लेशन कहा जाता है। ऐसी स्थिति में उपभोक्ता खरीदारी टालने लगते हैं, कम्पनियों की बिक्री घटती है, उत्पादन कम होता है और बेरोजगारी बढ़ सकती है। इसलिए नीति का लक्ष्य महंगाई को समाप्त करना नहीं बल्कि उसे संतुलित और नियंत्रित स्तर पर रखना होना चाहिए। महंगाई का प्रश्न केवल बाजार भाव का प्रश्न नहीं है बल्कि यह आम आदमी की थाली, परिवार की बचत, बच्चों की शिक्षा, बुजुर्गों की दवा, किसानों की लागत, उद्योगों की प्रतिस्पर्धा, निवेश की गति और देश की विकास दर से जुड़ा हुआ व्यापक आर्थिक-सामाजिक मुद्दा है।

50+ YEARS OF MOMENTUM
दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक
बदलत्या हवामानात स्वतःची काळजी घ्या...
आणि कल्याण जनता बँकिंग ॲप द्वारे तुमची सर्व बँकिंग कामे करा
- सुरक्षितपणे, सहज आणि घरबसल्या.
अर्थ सहकारेण कल्याणम्
TOLL FREE: 1800 233 1919
kalyanjanata.bank.in
KJSBank

राष्ट्र सेविका समिति की पूर्व संचालिका प्रमिला ताई मेढे प्रेम, वात्सल्य व करुणा की प्रतिमूर्ति थीं। उन्होंने अखिल भारतीय कार्यवाहिका और संचालिका तक के दायित्वों का बड़ी कुशलता के साथ निर्वहन किया।

डॉ. नीलप्रभा नाहर

8 जून जन्मदिन

स्मरण तुम्हारा स्फुरण हमारा

वंदनीय प्रमिलाताई मेढे

महिला समन्वय की मुम्बई में आयोजित अखिल भारतीय बैठक में एक विशिष्ट व्यक्तित्व का परिचय दिया गया। इस प्रकार की अखिल भारतीय बैठक में आने का मेरा यह प्रथम अनुभव था। अतः प्रत्येक गतिविधि को मैं ध्यान से देख रही थी। मैंने जब दृष्टि को उस विशिष्ट व्यक्तित्व की ओर केंद्रित किया तो देखा व्हील चेयर पर कृशकाय, परंतु तेजस्वी मातृवत्सल व्यक्तित्व विराजमान थी। आयु के प्रभाव के फलस्वरूप सिर पर श्वेत केश और त्वचा पर झुर्रियां थीं, पर मंच से उनका परिचय देते समय संचालिका श्रद्धापूर्वक उल्लेख कर रही थीं कि इस आयु (लगभग 90 वर्ष) और अवस्था में भी ताईजी बैठक में उपस्थित हुई हैं।

देदीप्यमान व्यक्तित्व, जिसकी मात्र उपस्थिति से ही कक्ष में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति ऊर्जा एवं उत्साह का अनुभव करता था, वह कोई और नहीं बल्कि परम आदरणीय एवं राष्ट्र सेविका समिति की पूर्व संचालिका प्रमिला ताई मेढे जी थीं। एक-दो अवसरों पर पुनः उनके दर्शन एवं चरण-वंदन का सौभाग्य भी मुझे प्राप्त हुआ। अपने महान व्यक्तित्व और प्रेरणादायी जीवन के कारण वे ऐसे लोगों को भी प्रभावित कर देती थीं, जो उनसे पूर्व परिचित नहीं थे। प्रमिला ताई जी का जन्म 8 जून 1929 को महाराष्ट्र के नंदुरबार जिले में हुआ था।

यह वह समय था जब देश की स्वाधीनता हेतु तीव्र प्रयास हो रहे थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना हो चुकी थी। उनके बाल्यकाल में ही राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना हो गई थी और वे बालसेविका बन गईं थीं। समिति की आद्य संचालिका वंदनीय लक्ष्मी बाई केलकर उपाख्य मौसीजी और द्वितीय संचालिका सरस्वतीताई आप्टे का मार्गदर्शन प्राप्त करते हुए वे युवावस्था में पहुंच गईं। समिति की समर्पित सेविका के रुप में उन्होंने अपना अध्ययन पूर्ण किया। स्नातक के साथ-साथ शिक्षक प्रशिक्षण भी पूर्ण कर 2 वर्ष तक नागपुर के सीपी बरार उच्च माध्यमिक विद्यालय में शिक्षण कार्य भी किया। तत्पश्चात वरिष्ठ अंकेक्षक की शासकीय सेवा भी की, परंतु राष्ट्र सेविका समिति के ध्येय के साथ ही जिसके जीवन का ध्येय भी एकाकार हो गया हो वह बहुत अधिक समय तक इस प्रकार के कार्यों में संलग्न नहीं रह पाता। शासकीय सेवा की निर्धारित अवधि पूर्ण होने से 12 वर्ष पूर्व ही उन्होंने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर अपना सम्पूर्ण समय राष्ट्र कार्य हेतु समर्पित करने का निश्चय कर लिया।

तेजस्वी हिंदू राष्ट्र के पुनर्निर्माण का कार्य ही अब उनके जीवन का ध्येय बन चुका था। वंदनीय मौसीजी और ताई आप्टे ने जिन्हें गढ़ा हो, निश्चय ही वे उनकी प्रतिमूर्ति ही होंगी। वे

प्रखर मेधाविनी थीं, पर सादगी की जीवंत मूर्ति भी थीं। शाखा, नगर, महानगर, विभाग और प्रांत के विभिन्न दायित्वों का निर्वहन करते हुए अखिल भारतीय कार्यवाहिका और संचालिका तक के दायित्वों का उन्होंने बड़ी कुशलता के साथ निर्वहन किया, परंतु सादगी, सरलता, निष्ठा, समर्पण और अनुशासन में कोई कमी नहीं आई। उनके वात्सल्य के अधिकारी प्रत्येक सेविका और प्रत्येक व्यक्ति थे, पर कठोर अनुशासन का पालन वे स्वयं से करती थीं। उनकी आयु या शारीरिक अवस्था के कारण उनकी दिनचर्या कभी प्रभावित नहीं होती थी। देश-विदेश के प्रवास के दौरान भी वे प्रातःकाल शीघ्र उठकर स्नान करतीं और अपने वस्त्र स्वयं धोती थीं। प्रतिदिन प्रातःस्मरण, गायत्री मंत्र, सायंस्मरण तथा अष्टभुजा स्तोत्र का जाप करना उनकी दिनचर्या का अभिन्न अंग था। शाखा और प्रार्थना का क्रम किसी भी स्थिति में नहीं टूटा। रीढ़ की हड्डी की मणिकाएं खिसक जाने के कारण असहनीय पीड़ा होने पर भी वे बैठकर समिति की प्रार्थना करती थीं।

आदरणीय ताईजी सन् 1950-1964 तक विदर्भ प्रांत की कार्यवाहिका, 1965-1975 तक केंद्रीय कार्यालय अहिल्या मंदिर की प्रमुख, 1975-1978 तक आंध्र प्रदेश की पालक अधिकारी रहीं। सन् 1978-2003 कार्यकाल के दौरान 25 वर्षों तक समिति की अखिल भारतीय कार्यवाहिका रहीं। सम्पूर्ण भारत और विदेशों में इंग्लैंड, अमेरिका, कनाडा और डरबन आदि स्थानों में उनका प्रवास रहा। इनके व्यक्तित्व और विचारों के प्रभाव के कारण ही अमेरिका के न्यू जर्सी महापौर ने उन्हें वहां की मानद नागरिकता प्रदान की थी।

समिति की आद्य संचालिका वंदनीय मौसीजी की जन्मशती के सुअवसर पर प्रमिलाताई जी ने अगस्त 2003 से मई 2004 तक, 266 दिनों तक पूरे देश में प्रदर्शनी के साथ सड़क मार्ग से 28,000 किमी का लम्बा प्रवास किया। कन्याकुमारी से जम्मू-कश्मीर तक और जूनागढ़ से इम्फाल और नेपाल तक चारों दिशाओं का व्यापक भ्रमण किया। नगर-नगर पहुंच कर समिति के कार्य और मौसीजी की जीवनी के माध्यम से स्त्री संगठन की महत्ता को विभिन्न वर्गों तक पहुंचाने का अनथक कार्य उन्होंने 70 वर्ष की आयु में सम्पन्न किया।

मैं कोटा राजस्थान की निवासी हूं। सेविकाओं के स्मृति पटल पर उस प्रवास की स्मृतियां आज भी जीवंत हैं। प्रवास के दौरान रसोई में सेविकाओं की सहजता से भोजन पकाने में सहायता करती थीं। पूर्व प्रांत संचालिका मनीषाजी आटले को उनके द्वारा बनाए गए महाराष्ट्रीयन अल्पाहार का स्वाद आज भी स्मृति में हैं। उनके इस दीर्घ प्रवास ने न केवल समिति के कार्य को विस्तार दिया अपितु राष्ट्र जीवन में स्त्री की भूमिका की महत्ता को भी प्रतिपादित किया।

2008 में देवगिरी प्रांत के बीड में प्रवास के दौरान पैर में फ्रैक्चर हो गया, पर वे सेविका अंक के लोकार्पण कार्यक्रम हेतु प्लास्टर भी लगवाना नहीं चाहती थीं। चिकित्सकों और सेविकाओं के आग्रह पर प्लास्टर लगवाया और बैठ कर अपना प्रबोधन दिया। शारीरिक रूप से किया गया यह उनका अंतिम प्रवास था। देवी अहिल्या मंदिर धंतोली नागपुर ही उनका स्थाई निवास था, लेकिन सतत साधना का क्रम, सेविकाओं और अन्य कार्यकर्ता बंधुओं के कुशलक्षेम की जानकारी लेने और उन्हें प्रेरणा देने का क्रम कभी नहीं रुका। अपने आत्मबल का परिचय देते हुए 2022 में भोपाल में आयोजित विश्व समिति शिक्षा वर्ग में आग्रहपूर्वक भोपाल पहुंचकर विश्वभर से आईं सेविकाओं से भेंट कर उन्होंने उनका उत्साहवर्धन किया। 31 जुलाई 2025, तदनानुसार श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन रामरक्षा स्त्रोत का वाचन करते हुए उनका महाप्रयाण हुआ। महाप्रयाण से पूर्व ही देहदान के संकल्प के साथ ही उनके निर्देश सेविकाओं को स्पष्ट रूप से प्राप्त थे कि शोकसभा नहीं करना, कोई कार्यक्रम स्थगित नहीं किया जाए। श्रद्धांजलि सभा में भी भारत माता का चित्र अथवा ॐ (ओम्) का चिह्न ही रखना। अपने नाम 'प्रमिला' के अर्थ 'मिलनसार' को चरितार्थ करते हुए उनका सुदीर्घ, तपस्विनी-सदृश जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए सदैव प्रेरणास्रोत बना रहेगा।

कविता

क्या तुम्हें अर्पण करूं

श्रद्धा से मस्तक नत है,
क्या तुम्हें मैं अर्पण करूं।
देह दानी, हे! तपस्विनी,
तुम्हें मैं क्या अर्पण करूं।
नाम प्रमिला, काम प्रमिला,
साधिका को साध्य मिला।

साध्य साधिका एक हुए,
कितना सुंदर संयोग मिला।
दीर्घ सुवासित जीवन से,
सुगंध मैं भी ग्रहण करूं।
श्रद्धा से मस्तक नत है,
क्या तुम्हें अर्पण करूं।

नाम स्मरण कर तुम्हारा,
गुण कुछ मैं पा जाऊं।
तेजस्वी सूर्य किरण से,
अणु कुछ मैं भी पाऊं।

राष्ट्रभक्ति महायज्ञ में,
बन हवि, मैं समर्पण करूं।
श्रद्धा से मस्तक नत है,
क्या तुम्हें अर्पण करूं।

शुद्ध सात्विक प्रेम अपने,
कार्य का आधार है।
अहं भाव विगलित करे सब,
कांधों पर राष्ट्र भार है।

भाव भक्ति ही नहीं, मां,
कृति भी अर्पण करूं।
और क्या अर्पण करूं!
मां और क्या अर्पण करूं।

कॉकरोच जनता पार्टी

नीट-यूजी पेपर लीक समेत परीक्षा सम्बंधी विवादों को लेकर कॉकरोच जनता पार्टी ने शनिवार को दिल्ली के जंतर-मंतर पर विरोध प्रदर्शन किया और केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान से त्यागपत्र की मांग की।

ललित गर्ग

विरोध या अराजक राजनीति का नया प्रयोग

दिल्ली के जंतर-मंतर पर आयोजित 'कॉकरोच जनता पार्टी' ने नीट-यूजी पेपर लीक समेत परीक्षा सम्बंधी विवादों को लेकर विरोध प्रदर्शन किया। यह आंदोलन प्रतियोगी परीक्षाओं में कथित अनियमितताओं, विशेषकर नीट परीक्षा में पेपर लीक एवं परिणाम सम्बंधी विवादों के विरोध में सामने आया। इसके आयोजकों ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री से त्यागपत्र की मांग की और शिक्षा व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता पर जोर दिया। किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में ऐसी मांगें उठाना अस्वाभाविक नहीं है, किंतु जिस प्रकार से इस आंदोलन को प्रस्तुत किया गया, जिस भाषा और प्रतीकों का उपयोग किया गया तथा जिस प्रकार इसे राजनीतिक रंग दिया गया, वह अनेक प्रश्न खड़े करता है। 'कॉकरोच जनता पार्टी' नाम अपने आप में एक राजनीतिक व्यंग्य है। यह नाम स्पष्ट रूप से देश की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी भारतीय

जनता पार्टी के नाम की नकल करते हुए बनाया गया प्रतीत होता है। आंदोलन के संचालकों का कहना है कि उन्होंने यह नाम एक कथित अपमानजनक टिप्पणी के प्रतिवाद में अपनाया। उनका तर्क है कि यदि युवाओं को कॉकरोच कहा गया तो वे उसी पहचान को प्रतिरोध की शक्ति बना देंगे।

पर प्रश्न यह है कि क्या लोकतांत्रिक संवाद का स्तर इस प्रकार के व्यंग्यात्मक नामों और प्रतीकों पर आधारित होना चाहिए? क्या इससे किसी रचनात्मक समाधान का मार्ग प्रशस्त होता है या केवल राजनीतिक कटुता और टकराव को बढ़ावा मिलता है? लोकतंत्र में व्यंग्य का स्थान अवश्य है, लेकिन जब व्यंग्य का उद्देश्य केवल उपहास और उकसावे तक सीमित रह जाए, तब उसकी सार्थकता संदिग्ध हो जाती है।

छात्र हित या राजनीतिक एजेंडा

किसी भी आंदोलन का मूल्यांकन उसके घोषित उद्देश्यों के साथ-साथ उसकी पृष्ठभूमि और कार्यप्रणाली के आधार पर भी किया जाना चाहिए। यदि छात्रों के हित, शिक्षा व्यवस्था में सुधार

और परीक्षा प्रणाली की पारदर्शिता वास्तव में इस आंदोलन के केंद्र में हैं तो यह स्वागत योग्य है। देश के करोड़ों युवा प्रतियोगी परीक्षाओं की निष्पक्षता को लेकर चिंतित हैं और उनकी चिंताओं को गम्भीरता से लिया जाना चाहिए, लेकिन जब किसी छात्र आंदोलन में विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं और सरकार-विरोधी समूहों की सक्रिय भागीदारी दिखाई देती है, तब यह आशंका भी उत्पन्न होती है कि कहीं वास्तविक मुद्दों का उपयोग राजनीतिक लाभ के लिए तो नहीं किया जा रहा। कई बार छात्र असंतोष को राजनीतिक मंचों के लिए ईंधन बना दिया जाता है, जिससे मूल समस्याएं पीछे छूट जाती हैं और केवल सत्ता-विरोधी अभियान प्रमुख बन जाता है।

जंतर-मंतर पर हुए प्रदर्शन में प्रतिभागियों ने कॉकरोच के मुखौटे पहने, तख्तियां उठाईं और प्रतीकात्मक प्रदर्शन किया। यह दृश्य निश्चित रूप से मीडिया का ध्यान आकर्षित करने में सफल रहा। आज के डिजिटल और सोशल मीडिया युग में प्रतीकों का प्रभाव बहुत अधिक होता है, लेकिन यह भी सत्य है कि प्रतीकात्मक राजनीति कई बार वास्तविक मुद्दों की गम्भीरता को कम कर देती है।

शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और बुनियादी ढांचे जैसे विषय राष्ट्रीय महत्व के प्रश्न हैं। इन पर गहन विमर्श, तथ्यात्मक बहस और ठोस नीति सुझावों की आवश्यकता होती है। यदि इन मुद्दों को केवल व्यंग्यात्मक प्रदर्शनों और नाटकीय प्रस्तुतियों तक सीमित कर दिया जाए तो समस्या का समाधान नहीं निकलता बल्कि समाज में भ्रम और उत्तेजना बढ़ सकती है।

लोकतंत्र में विरोध की मर्यादा

लोकतंत्र केवल अधिकारों का नाम नहीं है बल्कि उत्तरदायित्वों का भी नाम है। विरोध प्रदर्शन का अधिकार जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण है कि वह शांतिपूर्ण, तथ्यपरक और रचनात्मक हो। यदि विरोध केवल व्यवस्था को बदनाम करने, जनभावनाओं को भड़काने या सामाजिक विभाजन को बढ़ाने का माध्यम बन जाए तो वह लोकतांत्रिक मूल्यों के विपरीत माना जाएगा।

भारत की युवा शक्ति देश की सबसे बड़ी पूंजी है। युवाओं में ऊर्जा, उत्साह और परिवर्तन की आकांक्षा स्वाभाविक है। यही कारण है कि विभिन्न राजनीतिक और सामाजिक समूह युवाओं को अपने आंदोलनों से जोड़ने का प्रयास करते हैं, लेकिन युवाओं के लिए यह आवश्यक है कि वे किसी भी आंदोलन या अभियान का समर्थन करने से पहले उसके उद्देश्यों, पृष्ठभूमि और सम्भावित परिणामों का विवेकपूर्ण मूल्यांकन करें।

सिर्फ आकर्षक नारों, सोशल मीडिया ट्रेंड या प्रतीकात्मक प्रदर्शनों के आधार पर किसी आंदोलन का समर्थन करना उचित नहीं है। युवाओं को यह समझना होगा कि वास्तविक परिवर्तन केवल विरोध से नहीं बल्कि रचनात्मक भागीदारी, नीति संवाद और सकारात्मक प्रयासों से आता है।

परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता, पेपर लीक पर कठोर कार्रवाई, शिक्षा व्यवस्था में सुधार और युवाओं के लिए समान अवसर सुनिश्चित करना सरकार की जिम्मेदारी है। वहीं, नागरिक समाज और छात्र संगठनों की जिम्मेदारी है कि वे इन मुद्दों को गम्भीरता और तथ्यों के साथ उठाएं।

आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा सुधार के प्रश्न को राजनीतिक ध्रुवीकरण का विषय न बनाया जाए। यदि सरकार, विशेषज्ञ, शिक्षाविद् और छात्र संगठन मिलकर संवाद करें तो बेहतर समाधान निकल सकते हैं। केवल विरोध और प्रतिरोध की राजनीति से शिक्षा व्यवस्था की जटिल समस्याओं का समाधान सम्भव नहीं है। ●●●

दिल्ली संघ यात्रा पर बना वृतचित्र

अतुल गंगवार

'दिल्ली संघ की यात्रा' यह वृतचित्र दिल्ली में आरएसएस की पहली शाखा से लेकर, देश के विभाजन के समय स्वयंसेवकों द्वारा किए गए कार्यों की कहानी को प्रमाणों और संस्मरणों के माध्यम से दर्शाती है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण कर रहा है। इस अवसर पर देश भर में संघ एवं उससे जुड़े संगठन संघ की 100 वर्ष की यात्रा को अपने-अपने तरीकों से देश और समाज के सामने लाने का कार्य कर रहे हैं। इसी कड़ी में अभी हाल ही में संघ मुख्यालय केशव कुंज में 'दिल्ली संघ की यात्रा' पर बनी एक वृतचित्र का प्रदर्शन किया गया। 27 सितम्बर, 1925 में नागपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना परम पूजनीय डॉ. हेडगेवार जी द्वारा की गई थी। संघ की ये यात्रा 11 वर्ष के बाद दिल्ली पहुंची। सितम्बर 1936 में दिल्ली की पहली शाखा पुणे से आए स्वयंसेवक दिनकर राव ने दादा राव परमार्थ जी के साथ मिलकर हिंदू महासभा के प्रांगण में आरम्भ की थी। इस वृतचित्र में दिल्ली में वर्ष 1936 में हिंदू महासभा के प्रांगण में संघ की पहली शाखा से लेकर 2025 तक दिल्ली संघ की यात्रा के बारे में बताया गया है।

इस वृतचित्र की विशेषता है कि यह ना केवल संघ के विस्तार के बारे में बात करती है, तत्कालीन देश और समाज के हालात और उसमें संघ की भूमिका पर भी प्रकाश डालती है। 1936 से लेकर 2025 तक के कालखंड को दिखाती ये वृतचित्र स्वाधीनता आंदोलन, भारत विभाजन, गांधी की हत्या, भारत के साथ पाकिस्तान और चीन के युद्ध, आपातकाल, 1984 में हुए सिख नरसंहार, राम जन्मभूमि आंदोलन तथा दिल्ली में आई प्राकृतिक आपदाओं आदि के समय दिल्ली संघ की भूमिका पर प्रकाश डालती है। संघ से जुड़े वरिष्ठ स्वयंसेवकों के साक्षात्कार इसे विश्वसनीय बनाते हैं। यह अपने समय का महत्वपूर्ण कागजात इसलिए भी बन जाता है कि दिल्ली संघ कार्य को एक जगह देखना और समझना हो तो ये इतिहास एक जगह इससे पहले कहीं और नहीं मिलता है। इसकी विशेषता ये भी है कि इसमें दिल्ली संघ के द्वारा किए गए कार्यक्रमों एवं कार्यों के बारे में वो लोग बात कर रहे हैं जो संघ सेवा के द्वारा स्वयं किसी न किसी रुप में लाभान्वित हुए हैं। इस वृतचित्र को देखने के बाद आम दर्शकों तक उन सभी प्रश्नों के उत्तर स्वयं पहुंच जाते हैं, जिनके माध्यम से संघ विरोधी लोग या दल संघ को कटघरे में खड़ा करने का अथक प्रयास वर्षों से करते चले आ रहे हैं। सहज एवं सरल भाषा, आर्काइवल फुटेज एवं संगीत के माध्यम से सशक्त दृश्य संयोजन दर्शकों के मन पर प्रभाव छोड़ने में सक्षम है। कम बजट में बनी इस वृतचित्र का निर्माण इंद्रप्रस्थ विश्व संवाद केंद्र द्वारा किया गया है। लगभग 29 मिनट की यह वृतचित्र दिल्ली संघ के इतिहास को गागर में सागर के समान समेटे हुए हैं। आज की जेन-जी यदि संघ को समझना या जानना है तो दिल्ली संघ के कार्यों पर बनी इस वृतचित्र को अवश्य देखना चाहिए।

संस्कृति व सेवा का सर्वोच्च सम्मान

पद्म पुरस्कार

पद्म पुरस्कार सम्मान नहीं बल्कि राष्ट्र की सेवा, उत्कृष्टता और समर्पण की एक अमिट पहचान है। किसी भारतीय के लिए यह पुरस्कार पाना गर्व की बात है क्योंकि यह देश के करोड़ों नागरिकों की आकांक्षाओं, संस्कृति और प्रगति को प्रतिबिंबित करता है।

आशीष कुमार 'अंशु'

पद्म पुरस्कार प्राप्तकर्ता न केवल अपनी क्षेत्र में मील के पत्थर स्थापित करते हैं बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत भी बनते हैं। यह सम्मान बताता है कि भारत अपनी संतानों की मेहनत, रचनात्मकता और सेवा भावना को कभी नहीं भूलता।

पद्म पुरस्कारों का इतिहास

पद्म पुरस्कार भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में से एक हैं। इनकी स्थापना वर्ष 1954 में हुई थी। मूल रूप से दो नागरिक पुरस्कारों- भारत रत्न और पद्म विभूषण- के रूप में शुरू किए गए थे। पद्म विभूषण को बाद में तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया: पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्म श्री। ये पुरस्कार कला, सामाजिक कार्य, लोक मामलों, विज्ञान एवं इंजीनियरिंग, व्यापार एवं उद्योग, चिकित्सा, साहित्य एवं शिक्षा, खेल, सिविल सेवा आदि विभिन्न क्षेत्रों/विषयों में प्रदान किए जाते हैं।

* **पद्म विभूषण**: असाधारण और विशिष्ट सेवा के लिए।
* **पद्म भूषण**: उच्च कोटि की विशिष्ट सेवा के लिए।
* **पद्म श्री**: किसी भी क्षेत्र में विशिष्ट सेवा के लिए।

2026 के पद्म पुरस्कार

हाल ही में 25 जनवरी 2026 को वर्ष 2026 के लिए पद्म पुरस्कारों की घोषणा की गई। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कुल 131 पद्म पुरस्कारों (2 युगल मामलों सहित, जिन्हें एक माना गया) की मंजूरी दी। इसमें 5 पद्म विभूषण, 13 पद्म भूषण और 113 पद्म श्री पुरस्कार शामिल हैं। इस सूची में 19 महिलाएं, 6 विदेशी/एनआरआई/पीआईओ/

कैलाश चंद्र पंत: साहित्य और शिक्षा के समर्पित साधक

मध्य प्रदेश के वरिष्ठ पत्रकार और लेखक कैलाश चंद्र पंत को 2026 में पद्म श्री से नवाजा गया। साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान को यह सम्मान मिला। उन्होंने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

डॉ. नोरी दत्तात्रेयडु: कैंसर चिकित्सा के प्रणेता

डॉ. नोरी दत्तात्रेयु, कैंसर उपचार के क्षेत्र में विश्व प्रसिद्ध विशेषज्ञ, को 2026 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। उन्होंने रेडिएशन ऑन्कोलॉजी में अभूतपूर्व योगदान दिया।

अंके गौड़ा: ज्ञान के मंदिर के निःस्वार्थ रचयिता

कर्नाटक के मांड्या जिले के अंके गौड़ा को 2026 में पद्म श्री मिला। उन्होंने हरलहल्ली गांव में 'पुस्तक माने' (पुस्तकों का घर) नामक विशाल मुफ्त पुस्तकालय स्थापित किया, जिसमें 20 लाख से अधिक पुस्तकें हैं। पांच दशकों से अधिक समय से ज्ञान को आमजन तक पहुंचाने वाले अंके गौड़ा ने छात्रों, शोधकर्ताओं और गांववासियों को मुफ्त पहुंच प्रदान की।

ओसीआई और 16 मरणोपरांत पुरस्कार प्राप्तकर्ता शामिल हैं।

पुरस्कार प्रदान किए जाने वाले क्षेत्र

2026 के पुरस्कार विविध क्षेत्रों में योगदान को रेखांकित करते हैं, जो भारत की बहुलता और समावेशिता को दर्शाते हैं।

कला: सबसे अधिक पुरस्कार इस क्षेत्र में दिए गए, जिसमें संगीत, अभिनय, नृत्य, चित्रकला आदि शामिल हैं। उदाहरण: धर्मेंद्र सिंह देओल (मरणोपरांत, पद्म विभूषण), अलका याग्निक (पद्म भूषण), ममूटी, एन. राजम आदि।

साहित्य और शिक्षा: कई विद्वानों, लेखकों और शिक्षाविदों को सम्मानित किया गया, जैसे पी. नारायणन, कैलाश चंद्र पंत, मामिडाला जगदीश कुमार आदि।

खेल: क्रिकेटर रोहित शर्मा, हरमनप्रीत कौर, सविता पूनिया, प्रवीण कुमार आदि को पद्म श्री मिला, जो युवाओं को प्रेरित करता है।

चिकित्सा: डॉक्टरों और स्वास्थ्य सेवकों जैसे डॉ. नोरी दत्तात्रेयु, आर्मिडा फर्नांडीज आदि को मान्यता।

विज्ञान और इंजीनियरिंग: ए.ई. मुथुनायगम, कुमारस्वामी थंगराज, वी. कामकोटी आदि।

सामाजिक कार्य: ग्रामीण विकास, आदिवासी कल्याण और सामाजिक सेवा में योगदान करने वालों को पुरस्कृत किया गया, जैसे अंके गौड़ा, बृज लाल भाट, बुद्धरी ताती आदि।

लोक मामले और अन्य: सार्वजनिक सेवा, पुरातत्व, कृषि, व्यापार आदि क्षेत्रों में भी पुरस्कार वितरित किए गए।

इस वर्ष महाराष्ट्र, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल आदि राज्यों से सबसे अधिक प्राप्तकर्ता हैं, जो भौगोलिक समावेशिता को दर्शाता है। कई पुरस्कार छोटे गांवों, आदिवासी क्षेत्रों और गुमनाम नायकों को दिए गए, जो पद्म पुरस्कारों की विशेषता है- प्रसिद्धि से परे सेवा को सम्मानित करना।

प्रमुख प्राप्तकर्ता

पद्म विभूषण: धरमेंद्र सिंह देओल (मरणोपरांत, कला), के. टी. थॉमस (लोक मामले), एन. राजम (कला), पी. नारायणन (साहित्य एवं शिक्षा), वी.एस. अच्युतानंदन (मरणोपरांत, लोक मामले)।

पद्म भूषण: अलका याग्निक, ममूटी, उदय कोटक, शिवू सोरेन (मरणोपरांत) आदि।

पद्म श्री: रोहित शर्मा, हरमनप्रीत कौर, सामाजिक कार्यकर्ता और कलाकार।

पुरस्कारों का महत्व और प्रक्रिया

यह पुरस्कार न केवल व्यक्तिगत उपलब्धि का सम्मान है बल्कि राष्ट्र-निर्माण में योगदान को प्रोत्साहित करता है। ये पुरस्कार भारतीय समाज की एकता, विविधता और उत्कृष्टता का प्रतीक हैं। धर्मेंद्र जैसे दिग्गज अभिनेता, रोहित शर्मा जैसे खेल सितारे, अज्ञात सामाजिक कार्यकर्ता और वैज्ञानिक- सभी को एक मंच पर लाकर भारत अपनी समावेशी विरासत को मजबूत करता है। प्रत्येक प्राप्तकर्ता की कहानी मेहनत, समर्पण और राष्ट्रप्रेम की गाथा है। ●●●

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली
सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For Better World

पंजीयन करें

सेवा विवेक ग्रंथ

मौलिक एवं संग्रहणीय ग्रंथ, स्वयं एवं परिजनों के लिए पंजीयन करें

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।

सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।

सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।

सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।

इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।

आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

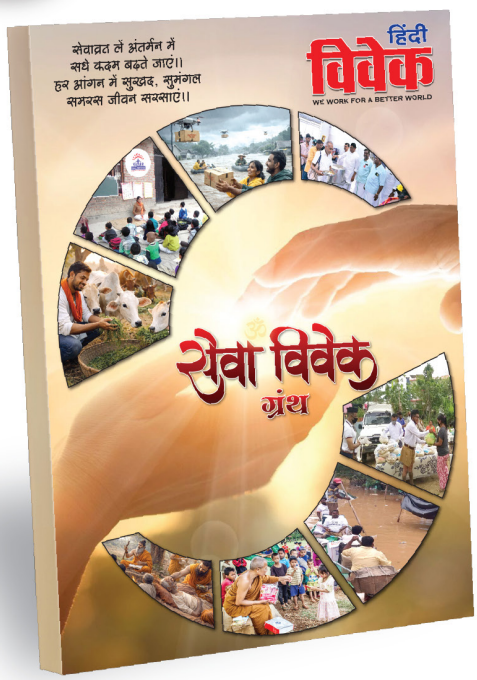

प्रकाशन पूर्व मूल्य
₹ 600/-

ग्रंथ का मूल्य
₹ 700/-

देश के गणमान्य विशेषज्ञों एवं लेखकों की कलम से समृद्ध विषय वस्तु से परिपूर्ण ग्रंथ

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com

राघव कुमार झा

व्यक्ति एवं राष्ट्र निर्माण की पाठशाला

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) का राष्ट्र निर्माण में योगदान अद्वितीय है, जो छात्रों को केवल भविष्य के नागरिक न मानकर उन्हें 'वर्तमान के जिम्मेदार नागरिक' के रूप में तैयार करता है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण के मूल मंत्र पर कार्य करते हुए शिक्षा, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता को मजबूत कर रहा है। अभाविप विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों, ज्ञान, शील और एकता के आदर्शों के साथ जोड़कर एक जिम्मेदार और देशप्रेमी पीढ़ी का निर्माण करता है। देश के विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में शिक्षा के स्तर को सुधारने, पारदर्शी प्रवेश प्रक्रिया और छात्रों की समस्याओं (जैसे- फीस वृद्धि, आधारभूत ढांचा) के विरुद्ध आवाज उठाने में यह संगठन सबसे आगे रहता है। अभाविप कार्यकर्ता आपदा राहत (बाढ़, भूकम्प के दौरान), रक्तदान शिविरों और स्वच्छता अभियानों में बढ़-चढ़कर योगदान देते हैं। संगठन समय-समय पर कश्मीर से लेकर पूर्वोत्तर राज्यों तक राष्ट्रीय सुरक्षा, आतंकवाद विरोधी अभियानों और सीमावर्ती क्षेत्रों में जागरूकता अभियान चलाकर राष्ट्रीय अखंडता को मजबूत करता है। अभाविप द्वारा छात्राओं के आत्मरक्षा प्रशिक्षण के लिए देशव्यापी मिशन साहसी जैसे विशेष कार्यक्रम चलाए जाते हैं, जिससे छात्राओं में आत्मविश्वास बढ़ता है। यह संगठन कॉलेज परिसरों से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक के नेतृत्व को मंच प्रदान करता है, जिससे देश को प्रशासनिक, राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में कई सक्षम नेता प्राप्त हुए हैं। आज निरंतर प्रवाहमान विद्यार्थियों को संगठित करने वाले विश्व का सबसे बड़ा छात्र संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् की यात्रा 9 जुलाई 1949 से प्रारम्भ हुई थी, वह आज भी अनवरत एवं निरंतर जारी है। इतने वर्षों में छात्र राजनीति के नाम पर अपनी राजनैतिक जमीन को भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था में लाने के लिए अनेक संगठन बने, बिखरे, विलीन हुए और फिलहाल कुछ विलुप्त होने की कगार पर भी है, लेकिन परिषद का कारवां 'चरैवेति-चरैवेति' के अपने ध्येय वाक्य के साथ में निरंतर अग्रसर हो रहा, जहां कुछ संगठन महज दिखावटी संघर्ष, अप्रासंगिक हो चुकी विदेशी विचारधारा में सिमटे हुए और अपने अस्तित्व को बचाने के लिए अभियान चलाते हैं। वहीं परिषद ने ना केवल इस वैश्विक महामारी के दौर में अपना कार्य विस्तार किया है अपितु स्वामी विवेकानंद जी का मूल मंत्र 'व्यक्ति निर्माण से देश निर्माण' को आत्मसात करते हुए समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रही है। आज देश के किसी भी शिक्षण संस्थान चाहे वह स्थान जेएनयू हो अथवा बीएचयू, कालाहांडी हो या कन्नूर, परिषद् कार्यकर्ता की एक विशेष पहचान है। यही पहचान ही उसे एक सूत्र में बांध कर एक लक्ष्य लेकर कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। इसी कारणवश इसे छद्म नामों व संगठनों से जुड़े होने की आवश्यकता नहीं पड़ती, जैसा की वामपंथी संगठनों में हमको प्रायः देखने को मिलता है। नए सम्पर्क में आए विद्यार्थियों के लिए परिषद की छवि कदाचित् आंदोलन या फिर छात्र राजनीति में सक्रिय संगठन के रूप में हो सकती है। वहीं पुराने कार्यकर्ताओं के लिए परिषद व्यक्तित्व निर्माण की पाठशाला, लेकिन समग्रता में परिषद को जब एक कार्यकर्ता देखता है तो सबको एक ही स्वरुप दिखाई देता है कि परिषद छात्रहित के साथ-साथ देशहित में कार्य करने वाला प्रवाहमान संगठन है। भारतीय समाज के बीच परिषद ने एक राष्ट्रभक्त संगठन के रूप में अपनी पहचान बनाने का कार्य किया है। इसी कारणवश परिषद ने अपनी अनूठी कार्य पद्धति एवं सांगठनिक क्षमता से समाज के एक बड़े वर्ग को अपना शुभचिंतक

बनाया है, जो कार्यकर्ताओं के व्यवहार, वैचारिक प्रतिबद्धता एवं उनके रचनात्मक व आंदोलनात्मक कार्यों से बनी है। बात छात्र आंदोलन की भी हुई तो ये आंदोलन विरोध के लिए विरोध करना नहीं बल्कि समाज परिवर्तन एवं विकास हेतु आंदोलन की बात कही गई, जो रचनात्मकता को समेटे हुई थी। एक-दूसरे से लड़ाने वाली स्वार्थी राजनीति नहीं, राष्ट्रनीति अर्थात देश प्रथम के विचार से लोक शिक्षा, लोक सेवा व लोक संघर्ष का भाव रखते हुए कार्य करना परिषद ने तय किया।

इसने ज्ञान-शील-एकता के मूल मंत्र को न केवल आत्मसात किया बल्कि इसके लिए परिषद ने छात्र समुदाय व संगठन के दर्शन का भी विकास किया, जिसकी जड़े भारतीयता के विचार में निहित है। 'छात्र शक्ति-राष्ट्र शक्ति' हो अथवा 'छात्र कल का नहीं, आज का नागरिक है' जैसे दर्शन का विकास काफी चिंतन, मनन व आधुनिक समय की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए हुआ। जहां साम्यवादी संगठन छात्रों की रचनात्मक उर्जा का यूं ही प्रयोग कर रहे थे, वही परिषद ने युवा तरुणाई की उर्जा को सकारात्मक दिशा देने की ठानी और देश के सामने आनेवाली चुनौतियों के समाधान के लिए उसे साध्य बनने को प्रेरित किया। जाति, पंथ, क्षेत्र, रंग, लिंग से परे 'एक राष्ट्र, एक पहचान' का भाव परिषद् के विचारों व कार्यों में स्पष्ट परिलक्षित होता है। परिषद ने विश्व की प्राचीनतम सभ्यता, गौरवशाली इतिहास व श्रेष्ठ संस्कृति की पवित्र भूमि भारत को शक्तिशाली, समृद्धशाली व स्वाभिमानी राष्ट्र बनाने का संकल्प ले कार्य करने हेतु युवा मन को तैयार करने व अपनी-अपनी भूमिका में इस लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में अपना योगदान हेतु प्रेरित किया। परिषद ने देश के संवेदनशील मुद्दों को लेकर भी न केवल देश का ध्यान का आकृष्ट करवाया बल्कि नीति-नियंताओं को भी कई निर्णय लेने को मजबूर किया। चाहे असम का आंदोलन हो या फिर आपातकाल के विरुद्ध संघर्ष, बाग्लादेशी घुसपैठ का विषय हो अथवा शिक्षा के व्यवसायीकरण, परिषद ने सत्ता के जनविरोधी नीतियों, भ्रष्टाचार, राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रश्नों को लेकर सदैव मुखर रही है। अभाविप के कार्यक्रम, बैठक, अभ्यास मंडल, अभ्यास वर्ग, अधिवेशन आदि उपक्रमों से एक दिशा में चलने वाले कार्यकर्ताओं की श्रृंखला खड़ी होती है, जिसके आधार पर लाखों छात्र परिषद से जुड़ते हैं। ऐसे ही विद्यार्थी परिषद एक कार्यकर्ता अधिष्ठित जन आंदोलन की तरह विकसित हुआ। हमारे यहां कार्यकर्ता एक सामान्य विद्यार्थी के रूप में आता है, वही धीरे-धीरे कार्यकर्ता के स्वरूप में कार्यकर्ता विकास की प्रक्रिया में जुड़ जाता है। ●●●

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For Better World

Combo Offer

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

- भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।
- सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।
- सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।
- सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।
- इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।
- आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

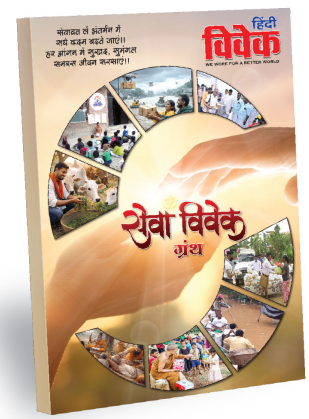

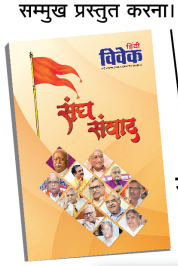

हिंदी विवेक की पंचवार्षिक सदस्यता + सेवा विवेक ग्रंथ

मूल्य ₹ 500 + मूल्य ₹ 1800 + मूल्य ₹ 700

कुल : ₹3000/-

आपको मिलेगा मात्र ₹ 2500 में

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें या...
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com

वायुसेना की निगरानी में नीट

प्रमोद जोशी

यूजी परीक्षा को लेकर पारदर्शिता और निष्पक्षता पर उठे प्रश्नों के बीच 3 मई को आयोजित नीट-यूजी 2026 परीक्षा को रद्द करने का निर्णय लिया गया है। आगामी 21 जून को पुनर्परीक्षा आयोजित की जाएगी, जिसका संचालन, सुरक्षा और गोपनीयता सुनिश्चित करने के लिए भारतीय वायुसेना की सहायता लेने का निर्णय लिया गया है।

प्रधान मंत्री कार्यालय की निगरानी में होने वाली नीट-यूजी पुनर्परीक्षा में केंद्र सरकार ने प्रश्नपत्रों के परिवहन के लिए भारतीय वायुसेना का उपयोग करने का निर्णय किया है। यह कदम नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) की उस घोषणा के बाद उठाया गया है, जिसमें 3 मई को आयोजित नीट-यूजी 2026 परीक्षा को रद्द करने का निर्णय किया गया था। जांच में पाया गया कि प्रस्तावित-प्रश्नपत्र के प्रश्नों से मिलते-जुलते कई प्रश्न परीक्षा से पहले ही प्रसारित हो गए थे। पुनर्परीक्षा 21 जून को होगी।

केंद्र सरकार अब यह सुनिश्चित करने के लिए हर सम्भव प्रयास कर रही है कि नीट-यूजी की पुनः परीक्षा बिना किसी गड़बड़ी या चूक के सम्पन्न हो। यहां मुख्य प्रयास 'विश्वास' की स्थापना का भी है। यह विश्वास, नई व्यवस्था बनाए रखने के लिए भी आवश्यक है। देश में सेना के प्रति जनता का विश्वास सबसे ज्यादा है। इसलिए आशा की जा रही है कि इस कदम से विश्वास पैदा होगा। बार-बार हो रहे 'लीक' के कारण जन्मे गहरे अविश्वास को दूर करने के लिए इसकी आवश्यकता भी है। नीट परीक्षा के लिए विशेषज्ञों का एक गुप्त पैनल प्रश्नपत्र तैयार करता है। इसके बाद उन्हें चुनिंदा प्रिंटिंग प्रेसों में भेजा जाता है, जिन्हें उच्च स्तरीय जांच के बाद चुना जाता है। इनकी छपाई सीसीटीवी कैमरों की निगरानी में होती है, जिनकी फुटेज को कम से कम एक वर्ष तक सुरक्षित रखा जाता है। प्रेस के अंदर केवल सीमित संख्या में ऑपरेटरों को ही अनुमति होती है। छपाई के बाद पेपरों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया जाता है। 3 मई के मामले की जांच कर रही सीबीआई के सामने प्रश्न है कि 'लीक' परिवहन में हुआ या छपाई के दौरान। ऐसे जोखिमों को समाप्त करने के लिए सरकार अंततः रक्षा बलों की सहायता लेने का निर्णय किया है। अब तक की जांच में नीट प्रश्न पत्र के प्रिंटिंग प्रेस से परीक्षा केंद्रों तक पहुंचने के दौरान लीकेज के कई सम्भावित-बिंदु सामने आए हैं। इसी कमी को दूर के लिए रक्षा बलों को जांच में शामिल करने पर विचार किया गया है। प्रश्न-पत्रों को प्रिंटिंग प्रेस से देश भर के परीक्षा केंद्रों तक पहुंचाने की जिम्मेदारी भारतीय वायुसेना की होगी। जून में बारिश के कारण मौसम की अनिश्चितता को देखते हुए भी यह निर्णय लिया गया है।

गत 27 मई को केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने आगामी नीट-यूजी पुनर्परीक्षा के सिलसिले में इसरो के पूर्व चेयरमैन डॉ. के राधाकृष्णन के साथ उच्च-स्तरीय समीक्षा बैठक बुलाई। इस बैठक के बाद धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि पेपर परिवहन के लिए वायुसेना को शामिल किया जाएगा। उन्होंने

कहा कि सुरक्षा सम्बंधी विचारों, विशेष रूप से जून में मौसम की स्थिति को देखते हुए प्रश्नपत्रों के सुरक्षित परिवहन में भारतीय वायुसेना को शामिल करने का निर्णय किया गया है। डाक विभाग द्वारा पहले किया जाने वाला कार्य अब भारतीय वायुसेना द्वारा भी किया जाएगा ताकि सभी कारकों को ध्यान में रखते हुए प्रश्न-पत्र समय पर गंतव्य तक पहुंच सकें। बाद में इस प्रस्ताव पर गुरुवार को शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के बीच भी उच्च स्तरीय बैठक में चर्चा हुई। उस बैठक में वायुसेना के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। बात केवल परिवहन की नहीं है बल्कि प्रश्नपत्रों की गोपनीयता और उन्हें 'लीक-प्रूफ' बनाए रखने की है। यह काम परिवहन के अलावा पूरी प्रक्रिया से जुड़ा है।

शिक्षा मंत्री ने कहा, पिछली परीक्षाओं में डाक विभाग, गृह मंत्रालय और राज्य सरकारों की अहम भूमिका रही थी। हमने पहले भी उनकी सहायता ली है और सुचारु, निःशुल्क और निष्पक्ष परीक्षाएं सुनिश्चित करने के लिए हम सरकार के समग्र सहयोगात्मक दृष्टिकोण को जारी रखेंगे।

डॉ. राधाकृष्णन उस उच्च-स्तरीय संचालन समिति के चेयरमैन भी हैं, जिसका गठन एनटीए से सम्बंधित सिफारिशों के कार्यान्वयन की निगरानी के लिए किया गया है। इस बैठक में उच्च शिक्षा सचिव, एनटीए के महानिदेशक, एनटीए के वरिष्ठ अधिकारियों और शिक्षा मंत्रालय के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस दौरान वर्तमान निगरानी तंत्रों का व्यापक मूल्यांकन किया गया और उन्हें और बेहतर बनाने पर विचार किया गया।

समस्या का एक हिस्सा नीट के आयोजन के तरीके में निहित है। जेईई कम्प्यूटर आधारित परीक्षा है, जबकि नीट पेन-एंड-पेपर परीक्षा है। अब तक प्रश्न-पत्र डाक सेवा के माध्यम से भेजे जाते रहे हैं। इसमें कई बार स्थानांतरण और अधिकारियों की भागीदारी रही है। सरल शब्दों में कहें तो इसमें मानवीय हस्तक्षेप शामिल है। इस दौरान कुछ लोगों ने मांग की कि नीट-यूजी परीक्षा कम्प्यूटर के जरिए कराई जाए, पर सर्वोच्च न्यायालय ने गत 1 जून को इस आशय की याचिका को स्वीकार करने से मना कर दिया। न्यायालय ने कहा कि परीक्षा एजेंसी पहले से ही कई समस्याओं का सामना कर रही है। उसमें बड़े बदलाव इस समय सम्भव नहीं हैं। हालांकि न्यायमूर्ति पीएस नरसिम्हा और न्यायमूर्ति अरविंद कुमार के पीठ ने याचिका को 27 जुलाई को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध कर लिया है। सीबीआई ने अब तक 13 लोगों को गिरफ्तार किया है, जिनमें प्रश्नपत्र अनुवादक, विषय विशेषज्ञ और मध्यस्थ शामिल हैं। ●●●

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

पंजीयन करें
पुस्तक का मूल्य ₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

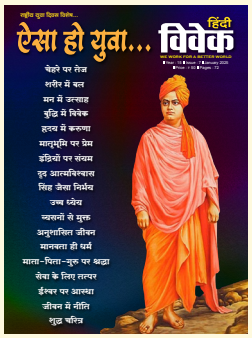

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

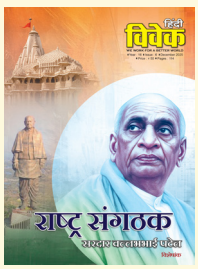

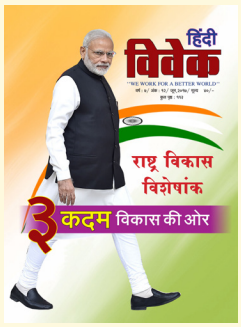

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 25,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067

सम्पर्क : +91 95949 91884

hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

निधि गोयल

क्या आप भी पीजी में रहते हैं तो आपको अपनी सुरक्षा व सुविधाओं के लिए हमेशा सजग व सचेत रहना होगा। आपको पीजी में रहने के दौरान कई बातों का ध्यान रखना आवश्यक होगा ताकि आपको किसी प्रकार की समस्याओं का सामना नहीं करना पड़े।

युवाओं के लिए सबसे पहले किसी शहर में अपने पसंद के कॉलेज में एडमिशन लेना या फिर नौकरी मिलना ही सबसे बड़ा चैलेंज होता है। उसके बाद शहर में रहना उससे भी बड़ा चैलेंज होता है। पीजी में रहने के दौरान आपको स्वयं को उस जगह के अनुरूप ढालना होता है। वैसे देखा जाए तो पीजी कम खर्च में एक अच्छा और सुविधाजनक विकल्प है। यहां रहने का सबसे बड़ा लाभ आपको दैनिक व्यवस्थाओं की चिंता कम रहती है, साथ ही नए लोगों से मिलने का अवसर मिलता है। पीजी में रहने के दौरान कुछ महत्वपूर्ण बातों पर भी ध्यान देना आवश्यक होता है ताकि आप अनावश्यक परेशानियां, अनुचित व्यवहार और जोखिमपूर्ण परिस्थितियों से बच सके।

व्यक्तिगत जानकारी साझा न करें

आप एक नए शहर में आए हैं, ऐसे में आपको नहीं पता कि कौन किस तरह के विचार रखता है। किसी पर विश्वास आंख बंद करके नहीं करें। आजकल वैसे भी पता नहीं कहां किस रूप में धोखाधड़ी हो जाती है। विशेषकर आपकी निजी जानकारी जैसे बैंक डिटेल्स, पासवर्ड, परिवार से सम्बंधित निजी जानकारी आदि साझा करने से बचें।

असहज अनुभव करने पर

यदि आपको ऐसा लगता है कि कोई व्यक्ति आपसे सही से व्यवहार नहीं कर रहा है या उसका व्यवहार आपको असहज लग रहा हो तो उसे स्पष्ट रूप से बता दें कि आपको उसका व्यवहार पसंद नहीं है क्योंकि अपनी सीमाओं को लेकर आत्मविश्वास दिखाना बेहद आवश्यक है। यदि आप ऐसा नहीं करते हैं तो सामने वाला आपको ज्यादा दबाने या आपसे बार-बार गलत व्यवहार करने का प्रयास करेगा।

संदिग्ध लोगों और उनकी गतिविधियों से दूरी बना लें

जहां आपको अनुभव होता है कि पीजी में कुछ इस तरह के लोग हैं, जो आपकी निजी जीवन या फिर गलत कामों में आपको शामिल करने के लिए दबाव बना रहे हैं तो ऐसे में आप ऐसे लोगों से दूर हो जाएं। साथ ही उनके बारे में अपने माता-पिता या फिर पीजी के अधिकृत लोगों से उनकी शिकायत करें। जिससे कोई आप पर इस तरह से दबाव न बना सके।

पीजी में ऐसे रहें सुरक्षित व सहज

निगरानी और सुरक्षा नियम

पीजी में सीसीटीवी कैमरे, एंट्री रजिस्टर और बायोमेट्रिक सिस्टम होते हैं। ये सुरक्षा के लिए आवश्यक हैं क्योंकि आपको पीजी में पता रहता है कि कौन आ-जा रहा है। रूम के बाहर सीसीटीवी कैमरा लगा होना ठीक है, लेकिन रूम के अंदर या फिर बाथरूम में सीसीटीवी कैमरे को चैक कर लें। आप इस मामले में अवश्य सावधानी बरतें। अपनी सुरक्षा अपने हाथ में है।

रात में देर से आने-जाने में सावधानी बरतें

अधिकांश जब बच्चे दूसरे शहर में मां-बाप से दूर चले जाते हैं तो उनको लगता है कि उनको स्वतंत्रता मिल गई है। तो ऐसे में वे सावधानियां नहीं बरतते जिसका नुकसान उन्हें उठाना पड़ जाता है। आवश्यक है कि आप पीजी में रहते हैं तो देर रात बाहर आने -जाने से बचें क्योंकि अभी आप ज्यादा लोगों को जानते नहीं है। साथ ही पीजी द्वारा आजकल आने-जाने के लिए परिवहन होते हैं। आवश्यकता हो तो उसी का प्रयोग करें। साथ ही किसी करीबी को अपनी लोकेशन की जानकारी अवश्य साझा करें।

आपातकालीन सम्पर्क हमेशा तैयार रखें

आवश्यक है कि आप अपने निजी लोगों के हमेशा सम्पर्क में रहें। जैसे परिवार के सदस्य, विश्वसनीय मित्र, पीजी मालिक या वार्डन, स्थानीय पुलिस या फिर नजदीकी अस्पताल आदि क्योंकि कभी किस चीज की आपको आपातकालीन आवश्यकता पड़ जाए पता नहीं होता है। ऐसे में आपको जागरूक रहना बेहद आवश्यक है। यदि आपके अंदर जागरूकता होगी तो आपको कहीं भी कोई दिक्कत नहीं होगी।

महत्वपूर्ण कागजात सुरक्षित रखें

हमेशा ध्यान रखें कि जो आपके महत्वपूर्ण कागजात हैं, उन्हें हमेशा साथ व सुरक्षित रखें। ये आपकी जिम्मेदारी है कि पीजी में जब आप रहें तो अपना आधार कार्ड, पैन कार्ड, शैक्षणिक प्रमाणपत्र और अन्य आवश्यक कागजातों की डिजिटल और फिजिकल कॉपी सुरक्षित स्थान पर रखें। मूल कागजात किसी को न सौंपें जब तक कि उसकी आवश्यकता और विश्वसनीयता स्पष्ट न हो।

पीजी की इन सुविधाओं पर ध्यान दें

पीजी में भोजन की सुविधा हमेशा होती है, ऐसे में आवश्यक है कि भोजन सही तरह से हाइजनिक तरीके से बन रहा है या नहीं। साथ ही पीजी में खाने का समय निर्धारित होता है तो उसी को ध्यान में रखते हुए आपको अपना रूटिन बनाना हेाता है।

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For A Better World
मासिक पत्रिका

शुल्क ₹ 500

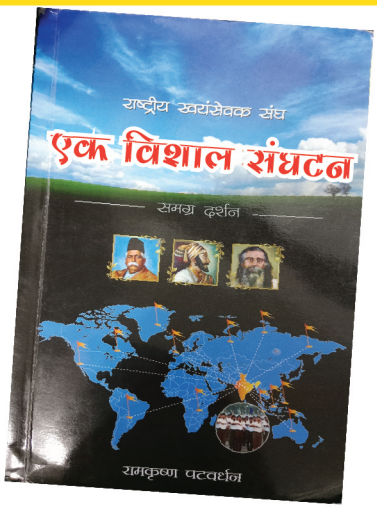

रा. स्व. संघ की स्थापना से लेकर शतकपूर्ति की यात्रा के विभिन्न पड़ावों तथा भविष्य के उद्देश्यों का सम्पूर्ण संकलन व आंकलन करने वाली पुस्तक

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाईन पंजीयन करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA-HINDI VIVEK

Bank : Bank of Maharashtra Branch : Prabhadevi
A/C No. : 60085108000 IFSC : MAHB0000318

सम्पर्क - 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

ढोकरा (भरेवा) कला केवल एक हस्तकला नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान, लोकज्ञान, सृजनशीलता और पारम्परिक कौशल का जीवंत प्रतीक है।

डॉ. मोनिका जैन

धातु में ढली संस्कृति और सभ्यता

ढोकरा कला, जिसे मध्य प्रदेश में भरेवा कला या भरई काम के नाम से भी जाना जाता है, भारत की सबसे प्राचीन धातु शिल्प परम्पराओं में से एक है। लगभग 4000 वर्ष पुरानी मानी जाने वाली यह कला सिंधु घाटी सभ्यता की प्रसिद्ध नृत्य करती युवती प्रतिमा से भी जुड़ी हुई है, जिसके निर्माण में इसी लॉस्ट वैक्स कास्टिंग अर्थात मोम ढलाई तकनीक के उपयोग का उल्लेख मिलता है। इस कला में मुख्य रूप से पीतल और कांसे की धातुओं से आकर्षक कलाकृतियों का निर्माण किया जाता है। मध्य प्रदेश के बैतूल जिले के भरेवा समुदाय ने इस अद्वितीय शिल्प परम्परा को पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित रखा है। ढोकरा कला के माध्यम से पशु-पक्षियों, जनजातीय जीवन, देवी-देवताओं, दीपकों, आभूषणों तथा विभिन्न सजावटी वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। यह केवल हस्तशिल्प नहीं बल्कि जनजातीय संस्कृति, लोकज्ञान, आस्था और प्रकृति से जुड़े जीवन-दर्शन की सशक्त अभिव्यक्ति है। ढोकरा कला की सबसे बड़ी विशेषता इसकी पूर्णतः हस्तनिर्मित प्रक्रिया है। प्रत्येक कलाकृति मोम के सांचे के माध्यम से बनाई जाती है और ढलाई के बाद सांचा नष्ट हो जाता है। यही कारण है कि कोई भी दो कलाकृतियां बिल्कुल एक जैसी नहीं होतीं। बैतूल जिले के टिगरिया तथा आसपास के गांव लम्बे समय से इस कला के प्रमुख केंद्र रहे हैं।

चुनौतियों के दौर में प्राचीन विरासत

वर्तमान समय में ढोकरा (भरेवा) कला अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। आधुनिक शिक्षा, रोजगार के बदलते अवसर, कच्चे माल की बढ़ती लागत, श्रमसाध्य निर्माण प्रक्रिया तथा युवाओं की पारम्परिक व्यवसायों में घटती रुचि के कारण नई पीढ़ी धीरे-धीरे इस कला से दूर होती जा रही है। परिणामस्वरूप सदियों पुरानी यह अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर विलुप्त होने के संकट का सामना कर रही है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से संरक्षण और संवर्धन

इसी चुनौती को अवसर में बदलने का महत्वपूर्ण प्रयास सर्च एंड रिसर्च डेवलपमेंट सोसायटी द्वारा किया जा रहा है। संस्था विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पारम्परिक हस्तकला के समन्वय के माध्यम से ढोकरा (भरेवा) कला के संरक्षण, संवर्धन और हस्तांतरण का कार्य कर रही है। मोम के धागे बनाने, मिट्टी के सांचे को पकाने एवं धातु को पिघलाने के लिए मशीनों का उपयोग किया जा रहा है। इस पहल के अंतर्गत युवाओं, महिलाओं और कारीगरों को आधुनिक डिजाइन, उत्पाद विकास, गुणवत्ता सुधार, विपणन प्रबंधन तथा वैज्ञानिक उत्पादन तकनीकों का प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। इसका उद्देश्य पारम्परिक ज्ञान को संरक्षित रखते हुए बाजार की मांग के अनुरूप नवीन उत्पाद विकसित करना है, जिससे यह कला आधुनिक समय में भी प्रासंगिक और आर्थिक रूप से लाभकारी बन सके। इस महत्वपूर्ण परियोजना को भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग का सहयोग प्राप्त है। परियोजना के माध्यम से नई पीढ़ी को न केवल इस विलुप्तप्राय कला का प्रशिक्षण दिया जा रहा है बल्कि इसे स्वरोजगार और उद्यमिता से भी जोड़ा जा रहा है। इससे कारीगरों की आय में वृद्धि, स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती तथा ग्रामीण एवं जनजातीय क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर सृजित हो रहे हैं।

प्रतिबंध

भारत द्वारा जापान को निर्यात किए जाने वाले आम पर प्रतिबंध लगाया गया है। आखिर जापान को आम का स्वाद रास क्यों नहीं आ रहा है, इस आलेख में विस्तार से चर्चा की गई है।

आम की मिठास नहीं आ रही रास

डॉ.धीरज फूलमती सिंह

गर्मियों का मौसम आते ही देश भर में आम की मिठास और सुगंध लोगों को मंत्रमुग्ध कर देती है। यही वह समय होता है जब भारत के कई राज्यों से आम विदेशों तक पहुंचते हैं और किसानों तथा निर्यातकों को अच्छी आय प्राप्त होती है। लगभग दो दशकों तक भारतीय आमों के आयात की अनुमति देने के बाद जापान ने वर्ष 2026 में भारत से ताजे आमों की खेप स्वीकार करने पर रोक लगा दी है। इसका असर अल्फांसो, केसर, लंगड़ा और बंगनपल्ली जैसी प्रीमियम किस्मों पर पड़ा है, जिनकी जापान में अच्छी मांग रहती है। भारतीय आमों पर रोक लगाए जाने का जापान का यह निर्णय काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इससे पहले भी जापान ने फ्रूट फ्लाई (फल मक्खी) से जुड़ी चिंताओं के कारण भारतीय आमों पर प्रतिबंध लगाया था। बाद में भारत ने अपनी उपचार एवं सुरक्षा प्रक्रियाओं को मजबूत किया, जिसके बाद वर्ष 2006 में यह प्रतिबंध हटा लिया गया था। अब लगभग 20 वर्ष बाद जापान ने एक बार फिर भारत की कीट नियंत्रण (पेस्ट कंट्रोल) और पादप सुरक्षा सम्बंधी प्रक्रियाओं पर चिंता व्यक्त की है। इस पूरे विवाद की जड़ में एक बेहद छोटा कीट है, जिसे 'फ्रूट फ्लाई' या फल मक्खी कहा जाता है। यह मक्खी आम के भीतर अंडे दे देती है। इन अंडों से निकलने वाले लार्वा फल के अंदर ही विकसित होते हैं और उसे सड़ा कर खोखला कर देते हैं। कई देश अपने यहां फल एवं सब्जियों के आयात से पहले वेपर हीट ट्रीटमेंट की अनिवार्यता रखते हैं ताकि किसी प्रकार के कीट या रोग का प्रसार न हो सके। जापान इस मामले में विशेष रूप से सख्त दृष्टिकोण अपनाता है। 1970 के दशक में उसके दक्षिणी क्षेत्रों में फ्रूट फ्लाई का प्रकोप फैल गया था। इसका असर आम, पपीता और अन्य फलों की खेती पर पड़ा था।

इस समस्या के उन्मूलन के लिए जापान ने बड़े पैमाने पर अभियान चलाया था। यह एक लम्बी और महंगी प्रक्रिया थी, जिसमें कई वर्ष लग गए। इसी अनुभव के कारण वहां कृषि और आयात सम्बंधी नियम अत्यंत कठोर बना दिए गए। आज जापान इस मामले में 'जीरो पेस्ट टॉलरेंस' की नीति पर काम करता है।

आम का मौसम शुरू होते ही जापान अपने कृषि वैज्ञानिकों की एक टीम भारत भेजता है। यह टीम वेपर हीट ट्रीटमेंट सुविधाओं में आम की विभिन्न किस्मों की तकनीकी जांच करती है। जांच के दौरान आमों को संक्रमणमुक्त (डिसइंफेक्ट) किया जाता है। इस प्रक्रिया में किसी भी प्रकार के रासायनिक पदार्थ का प्रयोग नहीं किया जाता। इसके बजाए आमों को नियंत्रित तापमान और आर्द्र वातावरण में रखा जाता है, जिससे फल मक्खी के लार्वा नष्ट हो जाते हैं। यद्यपि जापान भारतीय आमों का सबसे बड़ा या सबसे महत्वपूर्ण आयातक नहीं है, फिर भी वह भारतीय आमों के लिए अच्छी कीमत चुकाता है। भारत प्रतिवर्ष लगभग 280 लाख मीट्रिक टन आम का उत्पादन करता है। जापान जैसे विकसित देश के बाजार से भारतीय आमों को बेहतर मूल्य प्राप्त होता है। जापान के इस प्रतिबंध के बाद भारतीय आम निर्यातकों को चिंता सताने लगी है। ●●●

आयुष्मान कार्ड एक ऐसा स्वास्थ्य कार्ड है, जिसके माध्यम से पात्र व्यक्ति कई बीमारियों का मुफ्त इलाज करवा सकते हैं, लेकिन कुछ बीमारियों का इलाज इस योजना के अंतर्गत नहीं किया जाता।

आयुष्मान से अछूती बीमारियां

आयुष्मान कार्ड भारत सरकार द्वारा 'प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना' के अंतर्गत जारी किया जाने वाला एक स्वास्थ्य कार्ड है। इसके जरिए पात्र परिवारों को देश भर के सूचीबद्ध सरकारी और निजी अस्पतालों में मुफ्त इलाज मिलता है। यह कार्ड मुख्य रूप से आर्थिक रूप से कमजोर, गरीब और वंचित परिवारों को दिया जाता है। बेघर परिवार, दिहाड़ी मजदूर, आदिवासी समुदाय और ऐसे परिवार जिनमें कोई वयस्क सदस्य (16 से 59 वर्ष के बीच) या दिव्यांगजन हों, इसके लिए पात्र हैं। शहरी क्षेत्र: कचरा बीनने वाले, मोची, फेरीवाले, रिक्शा चालक, सफाई कर्मचारी और मकान या दुकान का काम करने वाले मजदूर इस योजना का लाभ उठा सकते हैं। आयुष्मान कार्ड के जरिए कई बीमारियों का इलाज सम्भव है, लेकिन कुछ उपचार और सेवाएं इसके दायरे में नहीं आतीं, जिनमें शामिल हैं- आउटडोर पेशेंट उपचार, कॉस्मेटिक सर्जरी और सामान्य दांतों का इलाज कवर नहीं होते हैं। इसका उपयोग केवल उन्हीं गम्भीर बीमारियों और इलाज के लिए किया जा सकता है, जिनमें मरीज को कम से कम 24 घंटे के लिए अस्पताल में भर्ती होना पड़ता है। बिना भर्ती के इलाज, डॉक्टर की सामान्य फीस, रुटीन हेल्थ चेकअप और पुरानी बीमारियों (जैसे सामान्य बुखार, बीपी/शुगर की दवाइयां) का खर्च। ●●●

* **कॉस्मेटिक सर्जरी:** चेहरे या शरीर की सुंदरता बढ़ाने के लिए की गई सर्जरी।
* **दंत चिकित्सा:** सामान्य दांतों की सफाई, फिलिंग या रूट कैनाल जैसे इलाज कवर नहीं होते (गम्भीर हादसे या ट्यूमर के मामलों को छोड़कर)।
* **फर्टिलिटी उपचार:** इन विट्रो फर्टिलाइजेशन (IVF) या टेस्ट ट्यूब बेबी से जुड़े उपचार।
* **वैक्सीनेशन (टीकाकरण):** राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम में शामिल न होने वाले टीके।
* **जांच-पड़ताल:** सिर्फ टेस्ट कराने या ऑब्जर्वेशन के लिए अस्पताल में भर्ती होना आदि शामिल है।

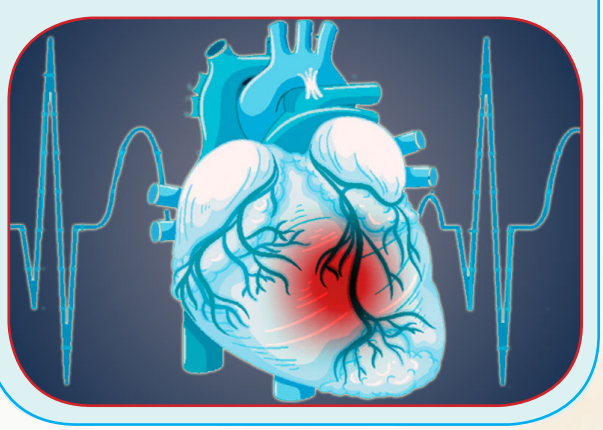

अनोखी साइकिल पर सैर

86 साल के सुधीर भावे, जो पेशे से इंजीनियर तो थे, लेकिन सेवानिवृत होने के बाद जब वे वर्ष 2016 में बड़ी बेटी के पास अमेरिका गए तो वहां उन्होंने बड़ी विचित्र साइकिलें देखीं। कोई बिना सीट की खड़े होकर चलाने वाली, कोई पांव आगे-पीछे करके चलाने वाली। उन्हें पता चला कि उन साइकिलों की कीमत 1400 डॉलर है, इस बात ने उन्हें और हैरान किया। बस फिर भारत लौटकर उन्होंने खुद ही ऐसी साइकल्स बनाने का निर्णय लिया। मित्र की वर्कशॉप में काम करते हुए उन्होंने महज 2-3 महीनों में लगभग 300 डॉलर की लागत से अपनी पहली अनोखी साइकिल तैयार कर दी। वड़ोदरा की सड़कों पर यह साइकिल इतनी लोकप्रिय हुई कि उन्हें इसके ऑर्डर भी मिलने लगे।

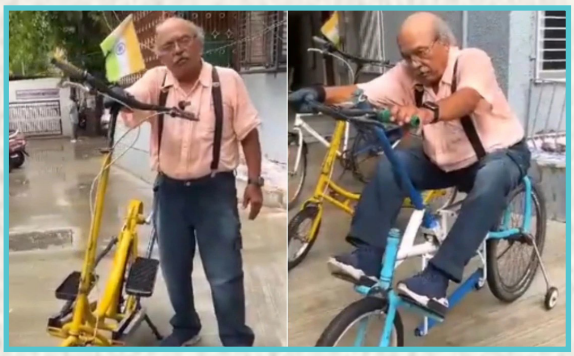

प्रदूषणरहित दूध की थैली

जब हम पैकेट वाला दूध खरीदते हैं तो उसकी थैली को कचरे के डिब्बे में फेंकते हैं, लेकिन अब इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। प्रमुख दुग्ध उत्पाद कम्पनी मदर डेयरी ने देश का पहला ऐसा मिल्क पाउच लॉन्च किया है, जिसे मिट्टी में डालने पर कुछ ही समय में वह प्राकृतिक रूप से विघटित हो जाता है।

एक पेड़ पर इतने किस्म के आम

वैज्ञानिकों द्वारा विकसित मल्टी-क्लोनल आम का पेड़ कृषि क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है। ग्राफ्टिंग तकनीक के माध्यम से एक ही पेड़ पर विभिन्न किस्मों के आम उगाए जा रहे हैं। यह अनूठा प्रयोग किसानों और बागवानों के लिए नई आशा लेकर आया है। बदलते मौसम और जलवायु सम्बंधी चुनौतियों के बीच यह मॉडल जोखिम कम करने के साथ उत्पादन को बनाए रखने में भी सहायक सिद्ध हो सकता है।

अब पौधे से बनेंगे गर्म कपड़े

राजस्थान के रेगिस्तान में उगने वाले आक के डोडों से निकलने वाले रेशों से अब गर्म कपड़े तैयार किए जा रहे हैं। बाड़मेर की डॉ. रूमा देवी फाउंडेशन आक के डोडों का संग्रह कर रही है। रेशों को गाजियाबाद और मुम्बई के प्रोसेसिंग प्लांट भेजा जा रहा है, जहां कॉटन और ऊनी रेशों के साथ मिक्स कर जैकेट, स्वेटर, शॉल और बैग बनाए जा रहे हैं। ग्रामीणों से आक के डोडे 20 रुपए किलो में खरीदे जा रहे हैं। इससे विशेषकर महिलाओं को रोजगार और अतिरिक्त कमाई मिल रही है।

TJSB SAHAKARI BANK LTD.
MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank

ONE ACCOUNT.
SAVINGS
+
PENSION.

Your existing Savings Account also can act as a Pension Account

www.tjsb.bank.in | ✆ : 022-48897204